Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- अक्टूबर २०१९
अङ्क -०७ (२००)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- चातुर्मास-अन्तिम समय में : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- बुराईयों को जलाने का नाम है- विजयादशमी : श्री विरागसागर महाराज जी ६
- झुकाने की कला : समयोचित से साभार ८
- इच्छा को त्यागने का नाम है- दीक्षा : श्री विरागसागर महारात जी ९
- अमावस्या भी शुभ मुहूर्त बनी- निर्वाण महोत्सव से : श्री विरागसागर जी महा. ११
- अहिंसक होते हैं मयूर पंख : श्री विरागसागर जी १३
- समय का सदुपयोग : क्षु. विज्ञप्तिश्री माता जी १६
- प्रज्ञा व प्रतिभा की जीवंत..: श्र. विभास्वरसागर १७
- महामहोदधि विरागसिंधु : श्र. मुनि आदित्यसागर १९
- परोपकारी गुरुवर : मुनि आचरण सागर जी २०
- देवों ने की वैय्यावृत्ति : आर्यि.विशिष्टश्री माताजी २१
- ऐसा सरल सन्त हमने कभी नहीं देखा : निखिल कासलीवाल २३
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागरजी २४
- हिंसक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग ना करें : संस्कार सुरभि से २६
- विरागामृत : २९

❖ **स्वास्थ्य जगत-**
- ऑव (पेचिश) : आर्यि.विवक्षाश्रीमाता जी २८

❖ **कविताएँ**
- आचार्यों के सरताज :आर्यि.वियुक्तश्रीमाता १०
- विरागसागर नाम हमें.... : पं. वृजेन्द्र कुमार जैन २२

❖ **समाचार** ३२

❖ **विराग वर्ग पहेली** ४२

संपादकीय

चातुर्मास-अन्तिम समय में

इंजी. आनन्द कुमार जैन

चातुर्मास धर्म कर्म का एक मौसम है एवं आस्था का प्रतीक है, साधु और श्रावक का योग है। चातुर्मास की बेला में सबसे बड़ा काम होता है साधुओं की सेवा करना, उनके नियम उनकी पद्धति के अनुसार चर्या में सहयोगी बनाना ये बहुत बड़ी बात मानी जाती है। वैसे तो धर्म और संस्कृति के संरक्षण में भट्टारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस विषय में देवगढ़ की जैन कला का निम्न गद्य पठनीय है। निवृत्ति प्रधान जैन धर्म में साधक, गृहत्यागी, तपस्वी श्रमण साधुओं की परम्परा प्राचीन काल से अस्तित्व में रही है। इसमें सम्पूर्ण अंगधारी आचार्य निग्रन्थ परम्परा के ही थे, जो शास्त्रोक्त विधि से मुनिचर्या का पालन करते थे। अन्तिम अंगधारी आचार्य पुष्पदंत और भूतवली के पश्चात् अंगज्ञान सहित श्रुतज्ञानियों की परम्परा में आचार्य अर्हद्बली द्वारा प्रदत्त कई संघों का निर्माण हुआ, वे भी दिगम्बर श्रमण चर्या का संहनानुसार उत्कृष्ट पालन करते थे। काल के अनुसार दिगम्बर और श्वेताम्बर भेद की कट्टरता के साथ दिगम्बर मुनिराज भी बनवास छोड़ चैत्यवास कर साधना करने लगे। चातुर्मास में सुहावना मौसम, वर्षा ऋतु का आगवन, समशीतोषण प्रकृति तथा व्यवसाय की मंदता आदि कारणों से सारे देश में चातुर्मास में यह पर्व विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्षमा मार्दव आर्जव शौच सत्य संयम तप त्याग आकिन्चन्य और ब्रह्मचर्य रूप इन दश लक्षणों में क्षमा को प्रथम स्थान दिया गया है। जिसका कारण है कि क्षमा का भाव ही संपूर्ण धर्म साधना की मनोभूमि प्रदान करता है। इसके आने पर ही मृदुता ऋजुता आदि शेष धर्मों की बात आती है। क्षमा से प्रारंभ हुई यह धर्म-यात्रा आत्मरमण रूप ब्रह्मचर्य में परिणित हो जाती है। प्रकृति भी हमें दशलक्षण वाले वैसर्गिक जीवन को अपनाने का संदेश देती है। बीज से वृक्ष की यात्रा में यह धर्म का जीवन अवतरित होते दिखता है।

परम पूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र में सहजता नम्रता के दर्शन होते हैं। जहाँ छोटी सी समस्या में व्यक्ति अपने कदम कमजोर कर लेते हैं जब व्यक्ति के कदम डगमगाने लगते हैं वहाँ पार्श्वनाथ भगवान प्रकट होते हैं और कहते हैं घबराओं नहीं यदि तुम सत्य पर हो तो तुम्हारी विजय होगी। भगवान पार्श्वनाथ विजय का पाठ पढ़ाते हैं और यदि सहनशीलता हमारे अंदर है तो सफलता भी निश्चित हमारे साथ आयेगी। व्यक्ति भगवान के पास जाकर प्रार्थना करता है। उनके चरणों में गिड़गिड़ाता है, अपनी समस्या उन्हें सुनाता है लेकिन जब सुनवाई का नम्बर आता है तब तक वहाँ से गायव हो जाता है यह उसकी सबसे बड़ी कमजोरी होती है। व्यक्ति आज के बोये हुये बीज का फल आज ही चाहता है लेकिन यह संभव नहीं है। उस फल को पाने के लिये कुछ धैर्य भी चाहिए। हाँ जब हमारी भक्ति सच्ची होती है तो उसके चमत्कार से तत्क्षण भी फल प्राप्त हो सकता है। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र अनेकों उपदेशों से भरा हुआ है। उन्होंने करूणा दया, अहिंसा के मात्र नारे ही नहीं लगाये अपितु अपने आचरण में उतार कर जनमानस को दिखा दिया कि अहिंसा, दया, करूणा क्या होती है।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २५.१०.१९८४)

।। ऊँ ह्रीं णमो लोए उवज्झायाणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य प्राणी ही संसारार्णव से पार होने के लिये पंच परमेष्ठी भगवान की स्तुति वंदना करना आत्म ज्योति जगाना है और पंच नमस्कार मंत्र मंगलम: लोकोत्तम शरण भूत है और सर्व पापों का नाश करता है और साक्षात् मोक्ष दाता है और साक्षात् व्यतरों का उपद्रव और वे रचसंद्रनादि रोगादि को नाश कर विरागी बनाता है और स्वाध्याय ध्यान करना आप लोगों को साक्षात प्रदान करता है और ध्यानाध्यन कराकर मोक्षमार्ग की सिद्धि कराता है। अत: हे विमलात्मन् तुम अपनी अनुभूति की प्राप्ति के लिये आत्म ख्याति करने के लिए पंच नमस्कार मंत्र है उसका ध्यान करना श्रेयों मार्ग है। उसका जाप ध्यान पूजन करना कार्यकारी है सो प्रतिदिन करना चाहिए।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ मुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

न चिराद्धि पदं दत्ते, कृतिनां हृदि विक्रिया।
यदि रत्नेऽपि मालिन्यं न हि तत्कृच्छशोधनम्।। क्ष.चू. ११/२०।।

अर्थ- बुद्धिमानों के हृदय में विकार भाव बहुत समय तक स्थान को प्राप्त नहीं होता जैसे रत्न पर मैलापन भी हो जावे तो वह मलिनता कठिनाई से दूर करने योग्य नहीं होती।

बहुयत्नोपलब्धस्य, प्रच्यवो हि दुरुत्सहः।। क्ष.चू. ७/४।।

अर्थ- अधिक परिश्रम से प्राप्त वस्तु का वियोग अत्यन्त असह्य होता है।

स्थाने हि बीजवद्दत्त मेकं चापि सहस्रधा।। क्ष.चू. ७/६।।

अर्थ- योग्य स्थान में दी गई एक भी वस्तु बीज के समान हजार गुणा फल देती है।

मुखदानं हि मुख्यानां, लघुनामभिषेचनम्।। क्ष.चू. ७/९।।

अर्थ- महापुरुषों का सम्मुख होकर वार्तालाप करना छोटे आदमियों को राज्याभिषेक के समान आनंद दायक होता है।

षट्कर्मोपस्थितं स्वास्थ्यं, तृष्णावीजं विनश्वरम्।। क्ष.चू. ७/१२।।

अर्थ- षट्कर्मों से उत्पन्न सुख तृष्णा का कारण, नश्वर, पापजनक, परापेक्ष, परिणाम में दु:खजनक और दु:ख मिश्रित है।

अशक्तैः कर्तुमारब्धं, सुकरं किं न दुष्करम्।। क्ष.चू. ७/६३।।

अर्थ- असमर्थ जनों के द्वारा प्रारम्भ किया गया सरल कार्य भी कठिन हो जाता है।

तत्तन्मात्रकृतोत्साहै साध्यते हि सर्माहितम्।। क्ष.चू. ७/६४।।

अर्थ- उत्साह से तत्त्वरतापूर्वक कार्य करने वालों के द्वारा इच्छित कार्य सिद्ध हो जाते है।

सन्निधान समर्थानां, वराको हि परो जनः।। क्ष.चू. ७/६६।।

अर्थ- शक्तिशालियों के सामने अन्य असमर्थ मनुष्य दीन हो जाता है।

शक्यमेव हि दातव्यं, सादरैरपि दातृभिः।। क्ष.चू. ७/८१।।

अर्थ- आदर सहित दाताओं के द्वारा भी अपनी शक्ति के अनुसार ही वस्तु दी जानी चाहिये।

वत्सलेषु च मोहः स्याद्, वात्सल्यं हि मनोहरम्।। क्ष.चू. ८/२।।

अर्थ- वात्सलियों पर प्रेम भाव हो ही जाता है क्योंकि वात्सल्यभाव मन को आकर्षण करने वाला है।

बुराईयों को जलाने का नाम है विजयादशमी

प्रवचनकार -परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

बन्धुओ! आज नगर-नगर और घर-घर में विजयादशमी की चर्चा चल रही है इसे दशहरा भी कहते हैं। आज के दिन लोग रावण की बड़ी चर्चा करते हैं कौन है रावण और कौन है राम अच्छाईयाँ ही राम है और बुराईयाँ ही रावण हैं। दुनियाँ कितने धोंके में हैं एक ही पुतले को हर वर्ष जलाती रहती है और अंत में अपने घर आ जाती है कुछ भी असर नहीं पड़ता।

प्राचीन इतिहास के अनुसार जैनागम में लक्ष्मण ने और हिन्दू साहित्यों में राम ने रावण को मारा था। किन्तु आज तो रावण की रावण को जलाकर खुश हो रहा है। वह दूसरे रावण को तो देख रहा है किन्तु अपना रूप उसे दिख ही नहीं रहा है। लेकिन मेरा सोचना है यदि वह अपने आपको देखने का प्रयास करे तो उसे दिखेगा रावण वह नहीं रावण तो मैं हूँ। हम बहुत सारी भ्रांतियों में हैं कि रावण को जला दिया। सत्य यह है रावण का पुतला जलाने से कभी रावण नहीं जलता अपितु अपने अंदर की बुराईयाँ जलाने से रावण का दहन होता है।

लोग कहते हैं राम अथवा लक्ष्मण ने रावण को मारा जबकि राम-लक्ष्मण जैसे महा पुरूष कहाँ- किसी को को मारते सताते नहीं थे वे तो सभी की रक्षा करते थे। वास्तव में उन्होंने रावण नहीं रावण की बुराईयों को मारा था उसकी गत्वत चेष्टायें गलत दुर्गुणों को मारा था इस सत्य को हमने आज तक पहचानने का प्रयत्न नहीं किया और हम मात्र देखा देखी कागज के, घास फूस के, कपड़े लकड़ी आदि के रावण को ही आज तक जलाते रहे और उसी में खुशी मनाते रहे सही खुशी तो तब होगी जबकि बाहर से रावण का पुतला नहीं अंदर की बुराईयाँ रूपी रावण को दहन करके राम जैसी अच्छाईयों को प्राप्त कर सकेंगे।

जब हम लोग इडर गुजरात में थे तो वहाँ महावीर जयंति के अवसर पर एक रावण (अरविंद त्रिवेदी रावण का रॉल अदा करने वाले) आ गया उसने आकर के साष्टांग नमस्कार किया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ रावण और संतों के पास आकर नमस्कार कर रहा है उन्होंने खड़े होकर चरण छुये और दो शब्द बोलना प्रारंभ कर दिया और कहा- कि आप सही समझ रहे हैं रावण संतों के पास नहीं आ सकता और यदि आ गया है तो वह रावण, रावण नहीं रहेगा वह भी राम बन जायेगा। संतों के चरणों की महिमा मैने आज तक ये सुनी है कि उनके पास जाने से सारे पाप धुल जाते हैं ऐसा संतों का प्रसाद होता है यही सुनकर मैं आपके चरणों में आया हूँ और मुझे विश्वास भी है कि मेरे सारे पाप धुल जायेंगे, जब मैं यहाँ से लौटूंगा तो रावण नहीं राम के रूप में लौटूँगा।

सत्य है भगवान का मंदिर ऐसा ही होता है रावण के लिए द्वार खोले जाते हैं, उन्हें प्रवेश दिया जाता है लेकिन जब वहाँ से वे वापस निकलते हैं तो रावण नहीं राम के रूप में वापस निकलते हैं। जैसे किसी फेक्ट्री में रॉ मटेरियल आता है, सारा कच्चा माल आता है उस समय उसकी कोई कीमत नहीं रहती है लेकिन जब वहाँ से वापस होता है तो पक्का होकर निकलता है अच्छा होकर निकलता है सारा जगत उसकी कीमत करता है।

बन्धुओ! आज के दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी तभी से यह विजयादशमी का पर्व त्यौहार आम जगत में मनाया जाने लगा है। मैं चाहता हूँ हर व्यक्ति अपने जीवन में विजया दशमी मनाये और वह भी बुराईयों को त्यागने के रूप में, ज्यादा नहीं तो एक-एक बुराईयों को अपने जीवन से निकालते जायें तो सच्चे मायने में विजया दशमी मनाना सार्थक हो जायेगा। क्योंकि जीवन में सच्चे मन से जब कोई नियम, व्रत लिया जाता है तो अंतरंग में प्रसन्नता, खुशी होती है और वहीं प्रसन्नता संवेग है। **धम्मो धम्म फलम्मी हर सो भवो होई संवेगो**- धर्म और धर्म के फलों को देखकर जो आनंद आता है। एक छोटे से छोटा भी नियम धारण करो तो आनंद विभोर हो जाईये। इसका नाम है धर्म आप नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ो

तो उसमें भी खुशी होना चाहिए। अभिषेक को देखकर आनंदित होना चाहिए। दर्शन करने के बाद भी आनंद विभोर हो जाइये।

''मो उर हर्ष ऐसो भयो मनु रंक चिंतामणि लयो'' लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है व्यक्ति शब्दों में स्तुति जरूर पढ रहा है लेकिन चेहरे से तो ऐसा लगता है जैसे बड़ी वेदना, बड़ा कष्ट हो रहा हो। यूँ कहा जाता है-

''दान देय मन हरष विशेखे यह भव जस पर भव सुख पेखे'' आहार दान में आप कितना परिश्रम कितनी मेहनत करके चौका लगाते हो, महाराज का पड़गाहन करते हो, आहार कराते हो और फिर भी आनंद न आये। मुझे लगता है ऐसा तो कोई नहीं होता होगा। आहार दान देने में सभी को खुशी होती है और सच्चे मायने में वहीं धर्म हैं। सुख से सुख प्राप्त होगा। आज यदि खुशी हुई है तो मान सकते हैं वह बीज रूप होगी तो कल के दिन वहीं खुशी फल स्वरूप होगी। अत: ध्यान रखें कभी भी किसी तीर्थक्षेत्र पर जायें तो वहाँ की वंदना के साथ कोई न कोई नियम अवश्य लें कोई न कोई बुराई का त्याग करें।

बन्धुओ! यद्यपि जैन साहित्यों में विजया दशमी का अधिक उल्लेख नहीं मिलता लेकिन एक प्रसंग आया है कि भरत चक्रवर्ती दिग्विजय से जब लौटे थे तो ये जो नौ दिन थे वे उनकी विद्या आराधना के थे। उन्होंने विद्या देवताओं की आराधना की उसके बाद नगर में प्रवेश किया था।

वर्तमान समय/ काल को यदि हम देखें तो आज के दिन हमारे गुरु नाम गुरु आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज का शेडवाल में आचार्य पद महोत्सव मनाया गया था। यद्यपि आचार्य आदिसागर जी ने अपनी समाधि के पूर्व ही उन्हें आचार्य पद दे दिया था जिसका आम सभा के रूप में महोत्सव शेडवाल में आज के दिन हुआ था। जिसमें अनेकों साधु संत भी उपस्थित थे।

बन्धुओ! आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज एक ऐसे साधक थे कि जिनकी आत्मविशुद्धि से अनेकों सिद्धियाँ सहज ही हो गई थी उन्होंने किसी देवता की पूजा- अर्चना नहीं की मालायें नहीं फेरी केवल उनकी विशेष विशुद्ध चर्या का यह प्रभाव था।

आचार्य महाराज चार टाईम की सामायिक किया करते थे। तीन टाईम की तो सभी जानते हैं किन्तु अर्धरात्रि के समय भी वे सामायिक किया करते थे। जब वे किसी क्षेत्र पर थे वहाँ खुली छत पर प्रतिदिन तीन-तीन घंटे की सामायिक करने के बाद नीचे कमरे में आते थे। एक बार ठण्डी के मौसम में महाराज को बुखार आ गया डॉक्टर वैद्यों ने कहा आपको ठण्डी से बचना है खुले मौसम में नहीं बैठ सकते हैं। लेकिन महाराज का तो वह नियम ही था। अत: वे उस समय कुछ नहीं बोले धीरे-धीरे बुखार बढ़ता गया महाराज की सामायिक भी छत पर बराबर क्रम से चलती रही। जब लोगों ने देखा महाराज प्रतिदिन छत पर जा रहे है जबकि खुली हवा में बैठने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है निमोनिया की स्थिति भी खड़ी हो सकती है तो महाराज को रोकने के लिए उन्होंने एक उपाय निकाला वह यह कि जिस सीढ़ी से महाराज छत पर जाते थे उसमें ताला डाल दिया और चाबी जेब में रखकर घर ले गये। महाराज अपनी ध्यान साधना के योग्य समय पर वहाँ पहुंचे तो देखा यहाँ तो ताला बंद है उन्होंने पता नहीं क्या स्मरण विचार किया जिससे स्वयं ही ताला बिना चाबी के खुल गया और महाराज अंदर हुए कि यथावत् वैसा का वैसा ही गेट बंद हो गया ताला लग गया। महाराज अपनी सामायिक में लीन हो गये।

प्रात: काल हुआ तो सबसे पहले वही व्यक्ति आया जो चाबी ले गया था उसने कमरे में महाराज को देखा तो महाराज वहाँ नहीं थे लोगों में चर्चा फैल गई महाराज कहाँ गये, तो किसी ने कहा मंदिर में होंगे, लघु शंका, शौच गये होगें लेकिन काफी देर हो गई और जब सभी जगह देख लिया। महाराज नहीं मिले तो अंत में किसी ने कहा- कि संभव है महाराज छत पर हों वे प्रतिदिन छत पर ही सामायिक करते हैं। तो ताला लगाने वाले व्यक्ति ने कहा- भैया कल दोपहर में ही मैंने छत का ताला लगा दिया था उसके बाद स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, आरती हुई तो महाराज छत पर कैसे जा सकते हैं छत की चाबी मेरे घर पर है। आहार की बेला का समय हो गया तब लोगों ने कहा एक बार छत को खोलकर देख तो ले देखने में क्या परेशानी है लोगों ने चाबी मंगाकर ताला खोला तो देखा महाराज ऊपर बैठे हैं सभी ने कहा महाराज हम लोग तो कब

से ढ़ढ रहे थे। महाराज बोले हम क्या करते ताला बंद था इसलिए हम यही बैठे थे।

बन्धुओ! आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के शिष्य संभवसागर जी महाराज जिन्हें स्थविर पद दिया गया था। उन्होंने प्रत्यक्ष देखे अपने अनुभव सुनाये कि एक बार महावीर कीर्ति जी महाराज विहार कर रहे थे और रास्ते में अचानक तूफान आने लगा, बहुत तेज पानी की वर्षा होने से चलना संभव नहीं था और ऐसी अवस्था में चलना भी आचार्य महाराज दोष मानते थे। रास्ते में एक टीनसेट मिला, उसके नीचे आचार्य महाराज और सारा संघ खड़ा हो गया। आचार्य महाराज ने देखा क बारिस बंध होने की कोई भी संभावना नहीं है तो उन्होंने अपने कमण्डल से थोड़ा सा जल लिया और आकाश की ओर फेक दिया। पता नहीं उसमें क्या चमत्कार था मात्र एक ही मिनिट में घनघोर पानी बंद हो गया काली घटायें उड़ गई जैसे पानी का मौसम ही न हो। महाराज ने कहा चलो विहार करो। सभी ने आराम से विहार किया। ऐसे चमत्कारी थे आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज।

एक बार उनका संघ बड़वानी पहुंचा यद्यपि सभी की प्रार्थना पर वहाँ चातुर्मास की रूप रेखा बन रही थी उसी बीच एक श्रावक ने आकर कहा- महाराज यहाँ चातुर्मास में साधुओं के लिए शुद्ध दूध की व्यवस्था बनना मुस्किल है। यहाँ सामान है नहीं अन्य गाँव से कौन प्रतिदिन ला पायेगा। महाराज ने उसकी बात सुन विहार की घोषणा कर दी और पिच्छी कमण्डल उठाकर विहार करने लगे। इतने में वहाँ का मुंशी जैन था दौड़कर आया महाराज कहाँ जा रहे हो यहाँ चातुर्मास की तैयारियाँ हो गई। महाराज उसकी बात सुनकर आगे बढ़ने लगे गेट तक भी नहीं पहुँच पाये कि बहुत काली घटा छा गई पानी बरसने लगा और महाराज गेट के बाहर कुछ ही दूर पर पहुँचे थे इतने में आवाज आती है विहार रोको चातुर्मास यही होगा। ऐसी गम्भीर आवाज तो कभी सुनी नहीं थी सुनते भी कैसे वह किसी सामान्य व्यक्ति की आवाज नहीं थी वह क्षेत्रपाल की आवाज थी जिसकी अद्‌भुत भक्ति ने महाराज के बढ़ते कदम को लौटाकर बड़वानी में चातुर्मास कराया ऐसे आश्चर्य चकित करने वाले चमत्कारी संत थे। आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज उनकी कठोर साधना और सहज होने वाले चमत्कारिक घटनाओं को देख लोगों को धर्म के प्रति श्रद्धा-भक्ति स्वत: ही जाग्रत हो जाती थी। वे हमारे ही नहीं हमारे गुरुदेव आचार्य विमलसागर जी महाराज के भी परम उपकारी थे। आज उनके ७७वें आचार्य पदारोहण दिवस पर त्रिभक्ति पूर्वक बार-बार नमोस्तु करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हम सभी में भी अंतिम समय तक दृढ़ चारित्र पालने की क्षमता प्रदान करना ताकी हम भी आपके पद चिन्हों पर चलकर मोक्षरूपी मंजिल को प्राप्त कर सकें।

।। जय बोलिए महावीर कीर्ति महाराज की जय।।

झुकाने की कला

साधक तो कलाओं के भंडार होते हैं। उनसे विद्वेष करने वाले कम जन ही होते हैं। जो होते हैं, वे उन्हें अपना बना लेते हैं। अपनी ओर झुका लेते हैं। पर जमाना विपरीत है, हम कुशलता उसी की पूछते हैं जो कुशल है। बैठते उसी के पास हैं जो अपना है। क्षमा उसी से माँगते हैं जिससे हमारा झगड़ा-विरोध न हो। हम सोचते हैं असली दुश्मन नहीं झुकेगा, पर यह हमारी छोटी सोच है, ऊसर भूमि पर क्षणिक बरसात की तरह है। 'झुकती है दुनियाँ झुकाने वाला चाहिए'। विशाल दृष्टि व विशाल विचार बनायें तो पत्थर को भी पिघलाया जा सकता है। आवश्यकता है उपकार के बदले अपकार सहने की। हो सकता है आप समझाने पहुँचे, और वह आपको चार बातें सुना डाले। मार पीट भी कर दे। पर तब आपके मुखमण्डल पर समता रस टपके, तो वह पिघल कर पानी हो जायेगा। आप क्षमा बाद में मांगेंगे, वह पहले ही झुक जायेगा। अत: इस कला को जीवन में लाना, परम आवश्यक है।

समयोचित शिक्षायें से साभार

इच्छा को त्यागने का नाम है दीक्षा

प्रवचन- परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

जगत का हर प्राणी केवल मृत्यु तक ही सोच पाता है मृत्यु के बाद तक किसी की सोच नहीं पहुँच पाती, परिणाम यह निकलता है कि हमारे जीवन में बहुत बड़ा धोका हो जाता है। हम रुपया, पैसा, बंगला, धन, दौलत आदि लौकिक चाह तो रखते हैं लेकिन पारमार्षिकता से हम शून्य रह जाते हैं। अत: जब तक हमें यह ज्ञान नहीं होगा कि हमें आत्महित करना है, मेरे अंदर भी भगवत् शक्ति की जाग्रति हो इस प्रकार के भाव नहीं जागते तब तक सच्ची मात्रा में वैराग्य नहीं होगा।

जब तक अपनी आत्मा और परमात्मा से अनुराग नहीं जागेगा तब तक संसार का राग छूट नहीं सकता है इसलिए संयम पथ पर बढ़ने की पहली शर्त है कि व्यक्ति के अंदर में संसार से वैराग्य हो अर्थात् संसार वर्धिनी हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह ये पांच पाप सात व्यसन और भी जो इस प्रकार कारण हैं उनसे दूर रहना। धन, परिवार, घर, कुटुम्ब से मोह घटाना, आपने मोक्ष मार्ग पर बढ़ने की अनर्तमन से कितनी दृढ़ धारणा बनाई है ये सारी बातें संसार वैराग्य की सूचक हैं। इसके बाद शरीर से वैराग्य होता है क्योंकि जैन दीक्षा एक ऐसी दीक्षा है जिसमें सुविधा नहीं साधना प्रधान होती है। इस दीक्षा में आराम नहीं तपस्या प्रधान होती है। जैन दीक्षा साधनों की नहीं साधना की होती है।

दुनियाँ संसार की सुविधाओं की ओर कदम बढ़ाती है लेकिन जब तक संसार की सुविधायें व्यक्ति को अच्छी लगती है तब तक मोक्षमार्ग की ओर लक्ष्य ही नहीं जाता इसलिए बाह्य संसार को छोड़ना आवश्यक होता है। श्री, स्त्री, और संपत्ति ये ऐसी सामग्रियाँ हैं जो व्यक्ति के मन को विचलित कर देती हैं। जब तक व्यक्ति का जेब खाली रहता है तब तक कुछ दूसरे भाव होते हैं लेकिन भरे हुए जेब में विचार कुछ दूसरे होते हैं। खाली जेब और भरी जेब से जब व्यक्ति बाजार से निकलता है तो उसके परिणामों में भी अंतर देखा जाता है।

आज के समय में हमारे देश में अन्य देशों की अपेक्षा आर्थिक उपलब्धि भले कम हो लेकिन सत्य यह है कि हमारे देश बासियों में धार्मिक भावना है। अपने आराध्य, अपने प्रभु, परमात्मा के प्रति उनकी गहरी आस्था है। यही कारण है भारत का एक भी ऐसा नगर, ग्राम नहीं है जिसमें मंदिर न हो, हर ग्राम और उसकी हर गली में कोई न कोई मंदिर मूर्ति मिलती है। जब हम पुरातत्व की ओर जाते हैं तो सबसे अधिक प्राचीन पुरातत्त्व में जैन मूर्तियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। मोहन जोदड़ों के समय से लेकर आज तक जो भी पुरातत्त्व की खोज हुई है उसमें पुरातत्व विभाग इस सत्य निर्णय तक पहुँचा है कि जैन दर्शन सबसे प्राचीन मूर्ति मंदिरों पर अस्था रखने वाला दर्शन है।

बन्धुओ! एक बार मात्र इसी विषय पर सेमीनार हुआ था कि प्रतिमा विज्ञान का शुभारंभ कब से हुआ तो किसी ने ५वीं शताब्दी, किसी ने ७वीं शताब्दी तो किसी ने दो हजार वर्ष पूर्व किसी ने ५००० वर्ष पूर्व से कहा, इससे आगे कोई भी नहीं बढ़ पा रहा था लेकिन जब जैन धर्म पर बात आई तो हमारे यहाँ अकृतिम चैत्यालयों का व्याख्यान है जो किसी के द्वारा बनाये नहीं गये वे शाश्वत है, अनादि काल से हैं और अंनंत काल तक रहेंगे इस बात को सुन सभी ने जैन दर्शन को श्रद्धा भक्ति से स्वीकार किया।

सत्य तो यह है धर्म कोई भी क्यों न हो, दर्शन कोई भी हो और उनमें भक्ति, पूजा के तरीके भी अपने-अपने अलग हों, लेकिन हर भारतीय श्रद्धा से जुड़ा हुआ है, किसी न किसी रूप में उसकी भगवान के प्रति आस्था है और यह आस्था ही मोक्षमार्ग पर बढ़ने का सबसे बढ़ा संकेत देती है।

भगवान महावीर स्वामी अपने लिये जैन धर्म का सटीक सिद्धान्त उद्घोषित करते हैं- हर आत्मा के अंदर में परमात्मा बनने की शक्ति छिपी हुई है यदि वह सम्यक पुरुषार्थ करे तो वह भी परमात्मा बन सकता है लेकिन परमात्मा बनने के पूर्व वैराग्य होना आवश्यक है।

जैन दर्शन कहता है विरक्ति केवल विषय-वासना से ही नहीं अपितु उसे बढ़ाने वाले धन दौलत से भी विरक्ति होना चाहिए इसलिए अगर आपके पास रूपया-पैसा आदि धन है तो वह व्यक्ति को वासना की ओर ले जाता है। यूँ कहा जाता है राजेश्वरी सो नरकेश्वरी योगेश्वरी सो स्वर्गेश्वरी बुन्देलखण्ड की यह कहावत है कि जो व्यक्ति धन-वैभव में आसक्त रहता हुआ मृत्यु को प्राप्त होता है वह नियम से नरक की ओर जाता है और जो सन्यास धारण करके आत्म साधना करते हैं वे स्वर्ग और मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

बन्धुओ! हर दर्शन इस बात को स्वीकार करता है कि वैभव विलासता का संकेत देता है यद्यपि संत का मार्ग तो ऐसा

होता है जिसमें सब कुछ त्यागा जाता है। भगवान महावीर स्वामी ने जैन संतों को अणुमात्र भी परिग्रह रखने का निषेध किया है न वे सोना रख सकते हैं न चाँदी रख सकते हैं न रूपया पैसा आदि रख सकते हैं। उनके पास रहने को महल, घर, कुटी आदि कुछ भी नहीं होती है वे एक स्थान पर लगातार बहुत दिन तक नहीं रहते हैं। निर्ग्रन्थ संत एक ऐसे संत हैं कि वे अपने खाने के लिये वर्तन भी नहीं रख सकते हैं वे अपने हाथ में ही दिन में एक बार वीर चर्या के साथ आहार को स्वीकार करते हैं। उसमें भी यदि विधि के अनुसार न मिले तो उपवास कर लेते हैं लेकिन किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते हैं, दीनता प्रकट नहीं करते हैं। वे कभी रूपया-पैसों में हाथ नहीं लगाते हैं। लौकिक सुविधाओं से वे परम विरक्त रहते हैं। दीक्षा लेने वाले साधक अपने शरीर की भी परवाह नहीं करते हैं तभी तो वे बड़ी से बड़ी त्याग तपस्या करने के लिए तैयार हो जाते हैं। दीक्षा यूँ ही नहीं मिलती दीक्षा के पूर्व साधक गुरु चरणों में जीवन समर्पण करता है और उनसे प्रार्थना करता है कि मुझे मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ायें। गुरु भी साधक को परखते हैं हर तरह से उसकी परीक्षा करते हैं कहीं ये कच्चा तो नहीं है साधना पथ पर आने के बाद शिथिलाचारी तो नहीं करेगा मोक्षमार्ग को दूषित तो नहीं करेगा। उसके अंदर कल्याण की वास्तविक भावना है या लौकिक ख्याति, पूजा, लाभ की भावना है इतना सब कुछ देखने के बाद भी गुरुजन दीक्षा के अंत-अंत समय तक उसकी परीक्षा करते हैं।

ध्यान रखियें धर्म उम्र को नहीं देखता धर्म तो व्यक्ति के अंत:करण से उत्पन्न होता है। कोई नहीं सोच सकता कब किसकों वैराग्य हो जाये। अधिक पुण्यवान वे होते हैं जो भोगों को बिना भोगे ही बचपन से ही उनका त्याग कर देते हैं लेकिन वे भी कम पुण्यवान नहीं है जो भोग मार्ग को छोड़कर हरे-भरे परिवार से नाता तोड़कर मोक्ष पथ पर अपने कदम बढ़ाते हैं।

१. हमारे संघ के कुछ विशेष नियम है- हमारे संघ में लौकिन सुविधाओं के लिए कोई भी स्थान नहीं दिया गया है।

२. कोई भी साधक रूपया, पैसा, सोना-चांदी, न स्वीकार करेंगे न उसे छुयेंगे।

३. संघ में ए.सी., कूलर, पंखा का प्रयोग नहीं होता है।

४. हमारे संघ में किसी परिस्थिति से लाचार, लौकिक, ख्याति, पूजा की भावना वाले, खूब मंदिर, धर्मशाला निर्माण, खूब धर्म प्रभावना प्रवचन आदि करने की लौकिक इच्छा रखने वालों को दीक्षा नहीं दी जाती, यहाँ तो आत्मकल्याण जिसका प्रमुख लक्ष्य होता है उसे ही दीक्षा दी जाती है।

५. अपना संघ आगम के अनुसार चलता है साथ ही १३.२० पंथों से अतीत हो जिस देश की जो पद्धति है उसमें फेर बदलाव नहीं करते। तभी साधक मोक्षमार्ग में सफलता प्राप्त कर पाते हैं। समस्त इच्छाओं को त्याग कर एक मात्र मोक्ष की इच्छा लेकर जो मोक्षमार्ग पर बढ़ते हैं वास्तव में वहीं सच्ची दीक्षा कहलाती है।

आचार्यों के सरताज

श्रमणी आ. वियुक्त श्री माता जी

पथ पर पग-पग उपलब्धियाँ
पुष्प बनकर बिछ जाती हैं
न जाने क्या बात आप में
अर्पित यश और ख्याति है
विराग सागर नाम आपका
तीन लोक में है यशवंत
पंचमयुग में चलते-फिरते
आप स्वयं में है भगवंत
हे आचार्यों के सरताज गुरु
कृपा दृष्टि हो मेरी ओर
ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग से
जुड़ी रहे ये जीवन डोर

द्रोणगिरि तीर्थ पर तुमने
पद आचार्य हो ऐसे
जबरन पद पर बिठा दिया था
हो अनुशासन में सिरमौर
समता में हो महाऋषि
कवियों में हो महाकवि
गुण समग्र पाये हैं तुममें
यतियों में हो महायति
संस्कृत टीकाओं के सृजनकर्ता
भव्य जीवों के अधहर्ता
करूणा दया के पुंज प्रकट
आज्ञा हृदय से सिर धरता।।

अमावस्या भी शुभ मुहूर्त बनी- निर्वाण महोत्सव से

प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

बन्धुओ! आज का पावन पर्व दिवस वीर निर्वाण दिवस है। चातुर्मास के प्रारंभ में हम सभी ने वीर शासन जयंति मनाई थी और आज वीर निवार्ण दिवस बड़े आनंद के साथ मना रहे हैं।

संपूर्ण भारत में जहाँ-जहाँ भी भगवान महावीर स्वामी पर श्रद्धा रखने वाले प्राणी हैं उन सभी के अन्दर आज हर्ष और खुशी छाई हुई हैं। हर मंदिरों में घण्टानाद सभी को खुशी उत्पन्न कर रहा है हर मंदिर में भक्तगण श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत हो भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण लाडू चढ़ा रहे हैं। सारा बातावरण भगवान महावीर स्वामी की पूजन अर्चना के शब्दों से गुंजायमान हो रहा है।

हमारी जैन समाज दीपावली क्यों मनाती है इसका महत्वपूर्ण रहस्य यही है कि प्रात: काल भगवान महावीर स्वामी ने निर्वाण पद (निश्रेयस पद) प्राप्त किया था जिसकी खुशी में प्रात: निर्वाण लड्डू चढ़ाया जाता है और उसी दिन के सायंकाल गौतमगणधर स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी उसी की खुशी में जन-जन के घर में दीप जलाये जाते हैं। यद्यपि गौतम गणधर को कैवल्यज्ञान रूपी दीप की प्राप्ति हुई थी जिसमें संपूर्ण अज्ञान के अंधकार को नष्ट कर दिया था हमारे पास वैसा दीप तो नहीं है किन्तु हाँ उसके प्रतीक स्वरूप हम सभी अंधकार को नष्ट करने वाले दीपों को जलाकर ही उस खुशी का अनुभव कर लेते हैं। उनके प्रति अपनी श्रद्धा भक्ति व्यक्त कर लेते हैं।

संपूर्ण वर्ष में मात्र एक ही दिन ऐसा है जिसमें प्रात: सायं दोनों पहर में उत्सव मनाया जाता है। बन्धुओ! कहा जाता है दीपावली एक ऐसा शुभ मुहूर्त है कि इससे बड़ा अन्य कोई मुहूर्त नहीं होता। आम तौर पर ज्योतिष अमावस्या को शुभ नहीं मानती लेकिन संपूर्ण अमावस्याओं में कार्तिक कृष्ण अमावस्या की यह मंगल बेला भगवान महावीर के निर्वाण होने से शुभ ही नहीं शुभतर हो गई है। इसे बिना शोधा मुहूर्त माना जाता है। इस दिन के लिए तो ज्योतिषी भी बिना पन्ने पलटे सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त बतलाती है।

आज के दिन हिन्दु (वैष्णु) संप्रदाये में रामचंद्र जी को वनवास के बाद अयोध्या का राजा बनाया गया था। उसकी खुशी में भी जन-जन ने दीप जलाये और भी अन्य संप्रदाओं में अन्य कारणों से आज की दीपावली मनाई जाती है।

हम सभी भगवान महावीर स्वामी के शासन काल में रहते हैं। भगवान महावीर स्वामी हमारे इष्ट देव हैं। बहुत कुछ लोग ज्ञान संस्कार की कमी के कारण वेदी पर निर्वाण लाडू चढ़ा देना ही निर्वाण दिवस की सार्थकता मान लेते हैं लेकिन ध्यान रखें जब तक निर्वाणकाण्ड न हो जाए, पूजन न हो जाये तब तक लाडू का कोई खाश महत्व नहीं होता है। जो निर्वाण लाडू विधि विधान से चढ़ाया जाता है वहाँ एक अपूर्व ही आनंद खुशी होती है।

पूजन आराधना का फल श्रद्धा से जुड़ा होता है यदि श्रद्धा है तो केवल महावीर यह नाम भी मंत्र का काम करता है और भक्तों के बिगड़े कार्यों को बना देता है।

आज का दिन तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी और गौतम गणधर स्वामी की पूजन अर्चना करने का है प्रात: से सायंकाल तक भगवत भक्ति का रसास्वादन करने का है किन्तु देखा जाता है आज के दिन ही व्यक्ति इतना व्यस्त रहता है कि उसे भगवान की पूजन-भक्ति करने का समय ही नहीं मिलता है। प्राय: विजनेश-व्यापार इतना अधिक बढ़ जाता है कि व्यक्ति का सारा दिन उसी में निकल जाता है। भगवान को भूलकर धन कमाने और धन की पूजन करने में व्यक्ति मस्त हो जाता है। आज के दिन प्राय: सभी की तिजोरियाँ खुल जाती हैं। सोने-चांदी के गहने हो अथवा नोटों की गड्डियाँ व्यक्ति उनकी पूजन करते हैं। उनका सोचना रहता है कि आज के दिन तिजोरी खुली रखने से लक्ष्मी सीधी उसमें प्रवेश कर जायेंगी। किन्तु ध्यान रखो लक्ष्मी इतनी सस्ती नहीं है कि हर किसी के पास चली जाये लक्ष्मी भी समझदार होती है। वह धर्मात्मा पुरुष को खोजती है और उसके पास पहुँच जाती है। भक्त भी दो प्रकार के हो सकते हैं कुछ ऐसे भी लोग होते है जो इस जन्म में तो पाप कार्यों में लीन दिख रहे हैं उन्हें अपने कारोवार से धर्म करने की फूर्सत ही नहीं मिलती। भगवान

के दर्शन करने का गुरुओं को आहार दान देने का समय और भाव भी उनके अंदर नहीं होते लेकिन पिछले भव में उन्होंने खूब भगवत् भक्ति की थी दीन दुखियों की सेवा की थी उसके फल स्वरूप लक्ष्मी उन पर प्रसन्न रहती है वह भी तभी तक जब तक पिछला पुण्य उनकी सत्ता में है। जिस दिन पुण्य क्षीण हुआ उसी दिन लक्ष्मी उन्हें छोड़ देती है। फिर वे कितनी भी लक्ष्मी पूजन करें लेकिन लक्ष्मी उन पर कभी प्रसन्न नहीं होती।

बन्धुओ! दूसरे ऐसे भी भक्त होते हैं जिन्होंने पिछले जन्म में कभी अच्छे कार्य नहीं किये थे कभी किसी दीन-दुखियों को सहायता नहीं की थी लेकिन इस भव में वे भगवान की पूजन भक्ति में निमग्न रहते हैं गुरुओं की सेवा पात्रदान करने में तत्पर रहते हैं फिर भी उनके पास लक्ष्मी नहीं आती और तब तक नहीं आती जब तक उनके पिछले पाप कर्म का उदय चलता है।

भैया! कई व्यक्ति ऐसे समय में विचलित होने लगते हैं उनके परिणाम बिगड़ने लगते हैं वे सोचते हैं धर्म से कुछ नहीं होता। अरे! ऐसी भूल कभी मत करना, धर्म और भगवान को दोष देने के पहले अपने पूर्व जन्म के कर्मों को टटोलो कि हमने पहले कैसे कर्म किये हैं। सत्य है बुरे ही कर्म किये थे। तो अब धैर्य रखो धर्म करते जाओ एक दिन वह भी आयेगा कि आपके पापकर्म नष्ट होंगे और नये पुण्य कर्मो के उदय से जीवन सुखमय बन जायेगा। फिर लक्ष्मी की पूजन भी नहीं करनी पड़ेगी, उसे निमंत्रण, आमंत्रण नहीं देना पड़ेगा बिना बुलायें ही लक्ष्मी दौड़ी-दौड़ी आपके पास आयेगी क्योंकि आपके जीवन में पुण्यकर्म का उदय है और लक्ष्मी पुण्यवानों की चेली है अत: आज के दिन लक्ष्मी को आमंत्रण नहीं पुण्य को आमंत्रण दो, लक्ष्मी की पूजा नहीं भगवान की पूजन कर पुण्य वृद्धि करो और इतना पुण्य करें कि उसके उत्कृष्ट फल स्वरूप अरहंत अवस्था प्राप्त हो जाये। भगवान महावीर स्वामी की तरह हमारा भी निर्वाण हो जाये।

बन्धुओ! हम आज के दिन को खुशी और आनंद के साथ तो मनायें लेकिन यह भी ध्यान रखें कि हमारी खुशी कहीं दूसरे प्राणियों के लिए दुख भरी अभिशाप न बन जाये। ऐसे अवसरों पर प्राय: व्यक्ति पटाखें चलाकर खुशी मनाते हैं किन्तु यह नहीं सोच पाते कि ये पटाखें अन्य प्राणियों तथा हमारे स्वयं के लिए भी कितने हानिकारक हैं। पटाखों की तेज आवाज से कितने मुनष्य व पशु पक्षियों के बच्चे गर्भावस्था में ही बधिर हो जाते हैं। कितने छोटे-छोटे जीव-जन्तु उनसे होने वाले विस्फोट की आवाज से ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। पटाखों में निकलने वाले तरंगों से कई जगह आग लग जाती है जिससे करोड़ों की संपत्ति भस्म हो जाती है और लाखों परिवार का जीवन अंधकार मय हो जाता है। कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि पटाखे चलाने वालों के हाथ-पैर जल जाते हैं कितनों की तेज रोशनी के कारण आंखें चली जाती है और वे जीवन भर के लिए अंधे हो जाते हैं। इतना ही नहीं पटाखों से निकलने वाली कार्बनडाई ऑक्साइड एवं हानिकारक गैसों से वायुमण्डल प्रदूषित हो जाता है चारों तरफ गंदगी फैल जाती है इन सारी बातों के जिम्मेदार एक मात्र पटाखे चलाने वाले होते हैं। अत: पटाखें कभी न चलायें अन्यथा हम भगवान की वाणी अहिंसा धर्म के पालक भी नहीं कहलायेंगे। साथ ही देश की क्षति करने वाले आतंकवादी की कोटि में भी हमारी गिनती आ सकती है। इसलिये पटाखें कभी न चलायें तभी हम अपने और दूसरों के रक्षक बन दीपावली की सच्ची खुशियाँ मना सकते हैं और सभी को खुशी प्रदान कर सकते हैं। आज से वीर निर्वाण संवत् २५४६ प्रारंभ हो रहा है अर्थात् भगवान महावीर स्वामी को मोक्ष गये २५४५ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। २५४६वाँ वर्ष प्रारंभ हो रहा है। यह निर्वाण महोत्सव सभी के लिये मंगलकारी हो ऐसा मेरा सभी के लिए शुभाशीर्वाद है।

।। जय बोलिये महावीर भगवान की जय।।

दर्शनार्थ पधारे

२९ अगस्त २०१९ बेलगछिया उपवन मंदिर कलकता में भारतीय जनतापार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाश जी विजयवर्गी एवं श्री दिनेश पाण्डया जिला अध्यक्ष बीजेपी कलकता से प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के दर्शनार्थ पधारें। श्री कैलाश जी विजयवर्गी ने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर मंगल आशीर्वाद श्री सद्साहित्य ग्रहण किया। श्री दिगम्बर जैन मुनिसंघ व्यवस्था समिति ने पगडी तिलक लगाकर अतिथियों का सम्मान किया।

अहिंसक होते हैं मयूर पंख

प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महामुनिराज

बन्धुओ! जिस मयूर पंख की पिच्छिका संतों ने स्वीकार की है। जो मयूर पंख हिंदु संप्रदाय में शिव शंकर ने हाथों में धारण किया था। जिस मयूर पंख को श्रीकृष्ण ने अपने मस्तष्क पर धारण किया था। जिसे सरस्वती ने अपनी बाहन बनाया था। ऐसा मयूर एवं मयूर पंख बड़े ही महत्वशाली हैं।

मयूर पंख अनेकों विशेषताओं से युक्त होता है जिसमें सबसे प्रथम तो अहिंसा की प्रधानता होती है। मयूर पंक्षी जिन पंखों को स्वयं अपनी चोच से खींचकर अलग करता है उन्हीं पंखों को निर्ग्रन्थ दिगम्बर संत स्वीकार करते हैं। जबरदस्ती खींचकर लाये गये पंखों को नहीं। मूयर पंख एक वर्ष में इतने बड़े हो जाते हैं कि वे मयूर को भारी लगने लगते हैं। जिस प्रकार आपके बाल जब बड़े हो जाते हैं तो उनमें खुजली महशूस होती है तकलीफ महशूस होने लगती है मयूर की भी ऐसी ही स्थिति होती है। उसे उड़ने में, चलने में पंख भारी लगने लगते हैं इसलिए वह पंखों को निकाल-निकाल कर उसी तरह फेक देता है जैसे निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनिराज अपने केशों को निकाल कर फेक देते हैं। अषाढ़ माह से मयूरों की यह प्रक्रिया प्रारंभ होती है और कार्तिक माह तक मयूर सारे पंखों को निकाल देता है इस समय मयूर के बड़े-बड़े पंख नहीं दिखते।

कतिपय लोगों की सोच हो सकती है कि शायद मयूर को मारकर के पंख निकाले जाते हो या जबरदस्ती खीचे जाते हों ऐसी बात नहीं है क्योंकि मुनिजन उन पंखों की परीक्षा भी करते हैं। जिन पंखों को खीचकर निकाला जायेंगा तो उनकी जड़ों में मांस या रक्त लगा हुआ आयेगा। जिसे मुनिजन कदापि स्वीकार नहीं कर सकते। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि खींचकर निकाले गये पंख सलयुक्त टूटे तथा बिखरे हो जाते हैं जो मुनिराजों की पिच्छी में नहीं लगते इसलिए मुनिजन परीक्षण करके अहिंसक पंखों को ही स्तेमाल करते हैं अन्य को नहीं।

मयूर के द्वारा यत्र-तत्र स्थानों पर खीचे गये पंखों को ग्रामीण बच्चे बीन लेते हैं और एकत्रित कर जैन बन्धुओं को बेच देते हैं वे श्रावक जन उन पंखों को बड़े ही श्रद्धा भक्ति से साधु-संतों को सौप देते हैं।

यह पिच्छी मात्र शोभा के लिए धारण नहीं की जाती। प्राय: अन्जान लोग इसे झाड़ू कहने लगते हैं लेकिन यह कोई झाड़ू नहीं है यह मात्र जीव रक्षा का उपकरण है प्राणी संयम का उपहार है।

बन्धुओ! मयूर पंख में पांच गुण होते हैं- प्रथम तो यह पसीना ग्रहण नहीं करता। अश्वेदता इसका गुण है। अगर मुनिराज के लिए पसीना आ जाये और वे पसीना पिच्छिका से पौछ ले तो उसके पंख पसीना को फैला तो देते है लेकिन सोकते नहीं अर्थात् पसीने को ग्रहण नहीं करते गीले नहीं होते हैं। दूसरा गुण अरजकता यदि कभी बालू मिट्टी, धूल आदि में कोई जीव है तो भी हम पिच्छिका से उसे अलग कर देते है फिर भी मिट्टी हमारी पिच्छिका में लगती नहीं, यदि लग भी जाए तो हल्का झटकारने पर ही दूर हो जाती है। आपके कपड़े मैले हो सकते हैं चिकट सकते हैं लेकिन पिच्छि न मैली होती है न चिकटती है। तीसरा गुण कोमलता होती है अगर कभी आँख के अंदर भी मच्छर आदि चला जाये तो हम पिच्छि से उसे निकाल लेते हैं पिच्छि आँख के अंदर जाने पर भी आंख एवं मच्छर को कोई तकलीफ नहीं पहुँचाती। यह संकेत है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव को भी पिच्छिका से अलग करने पर उसे तकलीफ नहीं होती है। चौथा गुण ऋजुता अर्थात् लोचकता इसके पंख अंदर बाहर दोनों ओर मुड़ सकते हैं कदाचित कोई चींटी आदि जीव शरीर में काटते समय चिपक जाये तो पिच्छि उसके ऊपर से निकल जायेगी लेकिन उसे कष्ट नहीं पहुंचायेगी। यह भी अहिंसा का ही प्रतीक है। पांचवा गुण पिच्छिका में लाघव अर्थात् हल्कापन होता है। कमण्डल तो एक बार दूसरे को दिया जा सकता है लेकिन पिच्छिका को मुनिजन सदैव अपने हाथ में रखते हैं। एक बार किसी व्यक्ति ने कहा- महाराज श्री मुझे कमण्डल दे दीजिए तो मैंने उसके हाथ की ओर पिच्छि कर दी बोले नहीं, नहीं, पिच्छि नहीं चाहिए। मैंने कहा कमण्डल तो भारी होता है पिच्छि हल्की होती है ले लीजिए। बोले- नहीं पिच्छि को लेने के लिए बहुत सारे नियम लेने होते हैं।

सम्मेद शिखर जी में जब हमारा चातुर्मास हुआ और चातुर्मास के बाद पिच्छि परिवर्तन का दिन आया तो वहाँ

विराजमान आचार्य संभव सागर जी महाराज के पास जाकर हम लोगों ने प्रार्थना की आज सारे संघों की १०८ साधुओं के साथ पिच्छिका परिवर्तन होना है। आपको भी कार्यक्रम में उपस्थित होना है तो उन्होंने अपने स्वास्थ्य की अनुकूलता व्यक्त नहीं की उन्होंने कहा- बेटा यदि मैं चलूँगा भी और बीच में ही यदि पेचिस जैसी स्थिति बनी तो कार्यक्रम के बीच से उठना अच्छा नहीं लगेगा इसलिए मुझे छोड़कर मेरे सारे संघ का पिच्छि परिवर्तन वहीं होगा। तो मैं उनके लिए नई पिच्छिका लेकर गया था। दो प्रकार की पिच्छी थी एक हमारे संघ में यूज की जाती है वैसी गोल और दूसरी जैसी बाजार में आती है वैसी उन्होंने दोनों पिच्छिका हाथ में लेकर देखी बोले ये बहुत हल्की है मैं तो यही लूंगा और उन्होंने गोल वाली पिच्छि ली। पिच्छी बहुत हल्की होती है इसलिए साधुजन स्तुति वंदना करते समय घंटो-घंटो हाथ में लिये रहते है और उनके हाथ भी दर्द नहीं करते। इस तरह पिच्छी पंच गुणों से युक्त होती है। कार्तिक माह में लगभग सभी संघों में पिच्छिका परिवर्तन होती है इसी श्रृंखला में आज अपने संघ में भी पिच्छि परिवर्तन हो रहा है।

प्राय: लोगों की भावना रहती है कि पिच्छियों की बोलियाँ होना चाहिए मैंने कहा- महाराज लोगों को पैसों से कोई मतलब ही नहीं होता तो बोलियाँ क्यों? बोले- समिति वालों को लाभ हो जायेगा। मैंने कहा- लाभ के और भी अनेक तरीके हो सकते हैं। पिच्छि संयम का उपकरण है इसलिए इसमें संयम की प्रधानता होनी चाहिए।

सम्मेद शिखर जी (मधुवन) में थोड़ी ही समाज थी और वह भी प्राय: धार्मिक कार्यों में कम रूची रखती है अथवा यूँ कहें व्यापार में व्यस्त रहती थी फिर भी उस समय उन लोगों ने पिच्छिका प्राप्त करने के फॉम भरे। मैं सोच रहा था १०० फॉम हो जाये तो बहुत है लेकिन संतों के हाथ में रहने वाली पिच्छिका के प्रति भक्तों की इतनी श्रद्धा-भक्ति है कि उस क्षेत्र पर भी देश के कौने-कौने से इतने फॉम भरे कि उनकी संख्या लगभग ४०० तक पहुंच गई। जिसमें लगभग ५० फॉम ऐसे थे जिसमें प्रतिमा धारण कर पिच्छिका लेने की प्रार्थना की गई तो कई लोगों ने दीक्षा की प्रार्थना की। वहाँ की समिति वाले तो विस्मित हो गये बोले- महाराज एक ही दिन में इतने सारे व्रती तैयार हो जाते हैं। मैंने कहा- हाँ संतों की पिच्छिका का ऐसा ही चमत्कार होता है।

२०१८ सम्मेद शिखर जी में लगभग ९० साधु हमारे संघ के और अन्य आचार्य संभव सागर जी, आ. तन्मय सागर जी, आचार्य निरंजन सागर जी आदि गणिनी आर्यिका श्रेयांसमति जी, आर्यिका सुरत्नमति आदि माता जी एवं समस्त क्षुल्लक महाराजों को मिलाकर १०८ पिच्छि धारी साधु थे। मेरा मन था सभी का एकमंच पर पिच्छिका परिवर्तन हो, बड़ी खुशी हुई सभी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और उस दिन तो गया में वर्षायोग करने वाले ऐलाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज भी उपस्थित हुए, आचार्य सुबलसागर जी महाराज भी रांची में चातुर्मास करने के बाद वहाँ उपस्थित हुए थे मेरे अंदर यही भावना रहती है सारी समाज को एकता संगठन के सूत्र देने के पहले सभी संत एकमंच पर हर्ष, आनंद के साथ बैठ जाये तो समाज स्वत: एक हो जायेगी और वहाँ का वह भव्य पिच्छिका परिवर्तन ऐतिहासिक रूप में हुआ था।

बन्धुओ! इसी से जुड़ा आचार्य पदारोहण दिवस का प्रसंग भी आज है इस विषय में ज्यादा कहने का समय तो नहीं है फिर भी मुनि अवस्था में लगभग १० बार अलग-अलग आचार्यों की ओर से मुझे आचार्य पद देने के प्रसंग आये लेकिन मेरी धारणा थी मैं जब भी आचार्य पद लूँगा अपने गुरुदेव के हाथ से ही लूँगा इसलिए उन-उन प्रंसगों पर आचार्य पद स्वीकार नहीं किया था आज उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य विमलसागर जी महाराज इस बात को सुनकर बड़े प्रभावित थे हमारे संघ में और भी साधु उपाध्याय भरत सागर जी, चित्राबाई आदि बात करते थे कि विरागसागर जी को आचार्यपद दिये जा रहे हैं फिर भी वे लेने को मना कर रहे हैं।

पन्ना में जब गुरुदेव से मिलन हुआ था मुझे नहीं पता था वह मिलन अंतिम मिलन बन जायेगा। बड़े ही धूम-धाम से मिलन हुआ था उस समय आर.के. जैन ने आचार्य लगाकर मेरे नाम की जयकार लगा दी तो मैंने उन्हें उसी वक्त माइक से मना कर दी थी अभी मैंने आचार्य पद लिया नहीं है अत: आचार्य न लगायें।

इस बात को लेकर चित्राबाई अड़ गई उनने गुरुदेव विमलसागर जी से कहा- विरागसागर जी इतनी बार मना कर

चुके आपने उस वक्त क्यों नहीं कह दिया कि मैंने आचार्यपद दिया। आचार्य महाराज ने कहा संघ में भरतसागर जी उपाध्याय है इसलिए मैं कैसे कह सकता था। दोपहर में स्वाध्याय के समय चित्राबाई ने मेरा हाथ भरतसागर जी के हाथ में रख दिया और कहा- देखों इसमें आचार्य पद है या नहीं, भरत सागर जी बोले ये तो मेरे से पहले आचार्य बनेगा और बहुत सारी दीक्षाएँ देगा। उसके बाद गुरुदेव ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा- बेटा चिंता मत करो शिखर जी पहुँचकर मैं तुम्हें आचार्य पद दे दूँगा। मैंने कहा- गुरुदेव आप कोई फिक्र न करें मुझे कोई जल्दी नहीं हैं।

बन्धुओ! उस वर्ष मेरा चातुर्मास दौणगिर जी सिद्ध क्षेत्र पर हुआ था वहां से प्रकाश चंद जी सम्मेद शिखर जी गये और जब वे गुरुदेव के पास दर्शनार्थ पहुंचे और बताया मैं द्रौणगिर से आया हूँ तो गुरुदेव ने कहा- सभी संघ को और वहाँ की समिति को बोलना मेरे द्वारा विरागसागर जी को आचार्य पद दिया जा रहा है। और विरागसागर जी से कहना मेरी आज्ञा और आदेश है कि वे आचार्यपद स्वीकार करें। उस समय आचार्य सुमतिसागर जी महाराज का चतुर्मास भी सम्मेद शिखर जी में हो रहा था। प्रकाश चंद जी ने उनसे कहा- महाराज ऐसा-ऐसा बोल रहे हैं। तो उन्होंने कहा- अरे यह तो बहुत अच्छी बात है मैंने भी उन्हें आचार्यपद देने का दो बार प्रयास किया पर विरागसागर जी ने स्वीकार नहीं किया। आज उनके गुरु ने आचार्य पद दे दिया तो लो उन्हें आचार्य पद की पहल पिच्छिका मेरी और से दी जाये। उन्होंने गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माता जी से पिच्छिका मंगाकर प्रकाश चंद जी को दी जिसे लेकर वे द्रौणगिरी आये सभी से चर्चा की तो मैंने कहा- आपके पास क्या प्रमाण है कि गुरुदेव ने ऐसा कहा- बोले- ये पिच्छि प्रमाण है।

उसके बाद पण्डित बाबूलाल जी प्रतिष्ठाचार्य (पठावाले) और डेवडिया जी, उनके साथ ब्र. रमेश जी कुपी जो वर्तमान में आचार्य पद विशदसागर जी है ये लोग पुन: सम्मेद शिखर जी महाराज के पास गये और सारी बात फिर से की। गुरुदेव ने कहा- क्या मेरे वचनों पर विश्वास नहीं है, मैंने उनके लिये आचार्य पद दे दिया। अब आप सभी जाकर उनसे कहो वे गुरु आज्ञा स्वीकार करें आचार्य पद ग्रहण करें।

बन्धुओ! जब मुझे इस प्रकार की बात ज्ञात हुई तो मैंने कहा- मैं सम्मेद शिखर जी जाकर गुरुदेव के हाथ से ही संस्कार पूर्वक आचार्य पद लूँगा। लेकिन द्रौणगिरि में एक ऐसी रूप रेखा तैयार हो गई जिसका मुझे कुछ भी पता नहीं चला। वहाँ के मूर्धन विद्वान पण्डित श्री दरबारी लाल कोटिया, संयोजक के रूप में क्षमासागर जी के पिता श्री जीवनलाल जी सागर वाले, विहारी लाल जी मोदी, धर्मचंद्र जी मोदी आदि लगभग १५० विद्वान उस वक्त वहाँ पर थे। सिद्धचक्र विधान के बीच उस दिन संघ का पिच्छिका परिवर्तन होना था तभी सभी विद्वानों ने एक के बाद एक आचार्य पद का आग्रह करना शुरु किया। जब मैंने मना किया तो उन लोगों को कोई उपाय नहीं दिखा। उन्होंने सिंहासन सहित मुझे उठा लिया, बोले- आप स्वयं उठकर चौक पर नहीं बैठते तो कोई बात नहीं, बैठे रहिये और किसी ने मेरे हाथ पकड़े, किसी ने पैर ताकि उठ न जाये और सीधा ले जाकर आचार्य पद के चौक पर बैठा दिया और सारी क्रिया प्रारंभ कर दी चूंकि उन्हें गुरु आदेश ही वैसा प्राप्त हो चुका था इसलिए मैं आगे कुछ भी नहीं कह सका। लेकिन मेरा सोच है कि जो आज के साधकों में आचार्य पद की होड़ लगती है अवधारणा रहती है कि मुझे आचार्य पद मिल जाये उन सभी से मैंने कहा चाहूँगा नहीं-नहीं, जो साधना ध्यान आत्म विशुद्धि निर्विकल्प रूप से साधु अवस्था में आपकी हो सकती है वह आचार्य अवस्था में नहीं हो सकती। आचार्य बनने के बाद बहुत कुछ जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। आचार्यगण जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा मानकर आचार्यत्व का पालन करते हैं ताकि जिन शासन की ध्वजा अनवरत फहराती रहे मुनिचर्या का हर साधक निर्दोष पालन करते हुए सदैव इस मुनिधर्म रूपी गंगा को आगे बढ़ाते रहे।

मैं जानता हूँ आचार्यपद एक ओर कुंआ तो दूसरी ओर खाई की तरह है। अगर कुछ न कहें तो शिष्यों में उत्श्रृंखलपना आ सकता है और उस समय लोग यही कहते हैं गुरु को कंट्रोल करना चाहिए उनका अधिकार है। इधर जब कंट्रोल, अनुशासन की बात कहीं जाती है तो कई लोगों को कष्ट पीड़ा हो सकती है। इन सभी बातों को देखकर मैं एक ही बात कहता हूँ कि- भगवान की आज्ञा का मैं पालन कर रहा हूँ यदि आप लोगों को कष्ट हो तो मुझे क्षमा करना।

आज के दिन मैं संघ और उपसंघ में स्थित सभी साधुओं से क्षमा मांगकर अपनी क्षमावाणी मना लेता हूँ। निश्चित

है मैं आज्ञा अनुशासन की बात करता हूँ तो, आज वे बातें आपको कष्टदायी लगती हैं। लेकिन वे ही बाते बाद में सुखदायी प्रतीत होगी। अनुशासन में कष्ट जरूर महसूस होता है लेकिन उसका फल अच्छा निकलता है।

आज यदि आप अनुशासन के सांचे में ढ़लते गये तो आपकी चर्या में निखार आयेगा और जब आप समाज के बीच में पहुँचेगे तो आपकी निखरी चर्या देख हर जगह की समाज फूल की तरह आपको हाथ में लेगी और उपहार मानेगी। लेकिन यदि कही कमजोरी रह गई तो निश्चित है जो उपलब्धि आप पाना चाहते थे अथवा पा सकते थे उनसे वंचित रह जाओंगे। इसलिए जीवनोन्नति चाहने वालों को अनुशासन में ढ़लना ही श्रेष्ठ है ऐसा ही साधक आत्मसिद्धि के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

।। जय बोलिये महावीर भगवान की जय।।

समय का सदुपयोग

"Timed is Valueable"

समयसार ग्रंथ (गाथा नं. २) समय का सदुपयोग कैसे करें?

आज के भौतिक युग में किसी व्यक्ति के पास धर्म करने के लिये भगवान के दर्शन करने के लिये समय नहीं है। और बोलता है कि- "Time is Money" I have no time.

गुरुवर आचार्य विरागसागर जी महाराज कहते हैं कि- "Time is Valueable. It is use always in best i.e. religious work. like Dev-Darsan Self Study, Meditation, as well as for good and rigut knowledge.

Time is not vest but use in best.

समय से समय को समझों समय यानी आत्मा, आत्मा से आत्मा का मूल्य समझो, समय और आत्मा का संबंध अविनाभावी है। आचार्यश्री सदा कहते हैं कि समय का सदुपयोग कर लो, न ही तो समय हाथ से चला जायेगा। बाद में पछताओंगे। इसलिये जितना बने उतना ज्यादा समय धर्म कार्य में सदुपयोग कर लो। और जीवन को सफल बना दो।

समय से समय का मूल्याकंन नहीं किया तो फिर ये मनुष्य भव पाना Impossible है। समय यानी आत्मा समय के होते हुये समय यानी आत्मा को समझ लो। समय से दोस्ती/ आत्मा से कर लो। समय के साथ Contect लो। यही मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। क्योंकि-Time is never come to back and time is not wait for any thing इसलिये अपने Time or soul दोनों को अच्छी धार्मिक क्रियायें लगा दो। यानी आत्मा को समयानुसार शुभोपयोग में लगा दो। शुभोपयोग ही शुद्धोपयोग में एक दिन Convert हो जायेगा और सिद्धि की प्राप्ति हो जायेगी।

समय से समय का मुल्यांकन करने वाले ज्ञानी ही तत्वज्ञानी होकर भेद विज्ञान से संसार परिभ्रमण की स्थिति को घटाते हैं। सम्यग्दृष्टि होकर आत्म तत्व की भावना भाते हुये संसार से अति शीघ्रता से मुक्त हो जाते हैं। पता नहीं कब आयु का बंध हो जाये।

आज, समय का सही शद्धोपयोग करने वाले समय से समय को समझने वाले हमारे गुरुवर श्री १०८ प.पू. आचार्यरत्न श्री विरागसागर जी महामुनिराज प्रथम संत है। जिन्होंने अपने जीवन में एवं रोमरोम में समयसार को भर दिया है और अपना जीवन सफल एवं सार्थक बना दिया है।

संसार की उलझन में तो बचपन चला गया। जवानी भी चली जायेगी बचपन में न सही तो बचपन में सम्हल जाये तो भी बहुत अच्छा होगा। क्योंकि 'जब जागो तब सबेरा' अतीत को मत झांको वर्तमान को संभालो और भविष्य को उत्तम बनाओं। तो भवसागर तर जाओंगे।

समय के सदुपयोगी अधिष्ठता गुरुवर को, गुरु चरणों में समय की सतत पवित्र भावना भाती हूँ।

क्षुल्लिका विज्ञप्तिश्री माताजी

२८वें आचार्य पदारोहण पर

प्रज्ञा व प्रतिभा की जीवंत मूर्ति

श्रमण विभास्वर सागर जी

गुरुवर का प्रकाश, हमारे जीवन में बना रहे,
ममता जैसा प्यार, जीवन में बरसता रहे।
गुरुवर का आशीष, सदा हम पर बना रहे,
मीठी चीनी सी मुस्कान, सभी के चेहरे पर बिखरी रहे।।

जीवन को ऊँचाई देने के लिए हृदय में अच्छे आदर्श स्थापित करना आवश्यक है किसी भी व्यक्ति के निर्माण में आदर्श अनुशासन और वात्सल्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, मैं भी एक नादान बालक था जिसने आपका वात्सल्य पाया आपको अपना आदर्श बनाया और आपके अनुशासन में रहकर अपने जीवन को एक नई ऊँचाई की ओर ले जाने में अग्रसर हो रहा हूं। व्यक्ति का मनोबल ही उसे ऊंचाई पर ले जाता है परन्तु आचार्य श्री आपका आशीष और अनुशासन हमें सही दिशा प्रदान करता है।

गुरुवर आज मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कोई भी शिष्य अनुशासन के महत्व को समझे बिना सफलता नहीं पा सकता परन्तु सिर्फ अनुशासन नहीं आपका वात्सल्य और प्रेम हमें हिम्मत, साहस और अपने व्रत, संयम में दृढ रहने की क्षमता प्रदान करता हैं।

हजारो ऐब है मुझमें, नहीं कोई हुनर बेराक
मेरी खामी को आप, मेरी खूबी में बदल देना.... मेरे गुरुवर
मेरी हस्ती है एक खारे समुंदर सी
मुझे क्षमा कर मुझे, मीठी झील कर देना .... मेरे गुरुवर।

अनुशासन जीवन का प्राण है,
सफलता के लिए अनुशासन रामवाण है।
अनुशासन पशुता से ऊपर उठाता है,
अनुशासन ही मानव को मानव बनाता है।।

हे गुरुवर–

हे तुच्छ मेरे शब्द, आपके गुणो के गुणगान में।
यह कल्पना दरिद्र की है, चक्री के विधान में।।

हे गुरुवर आप तो प्रज्ञा प्रतिभा और तपस्या की जीवन्त मूर्ति है आप की ज्ञान की गहराई और चरित्र की ऊँचाई को पाना मुस्किल हैं पर आपसे यही कामना करता हूँ गुरुवर आपके जीवन चरित्र की कुछ विशेषताओं को ही अगर अपने जीवन में उतार सकूँ तो अपने जीवन को सार्थक समझूंगा।

जिस तरह आपने एक नादान बालक को तरासकर एक संत बना दिया उसी तरह आपके आशीष का हाथ हमेशा मुझ पर बना रहे ताकि आपने इस मनुष्य जन्म को सार्थक कर संयम, तप, त्याग और नियम में दृढ रहकर अपने जीवन को सफल बना सकूँ।

हे आचार्य गुरुवर गुरु आशीष से ही हम गुरु से दूर रहकर उनके बताए अनुशासन साधना कर धर्म की प्रभावना कर सकते हैं। गुरुवर अपने हर कार्य की शुरुवात करने से पूर्व आपका स्मरण करता हूँ, ताकि दूर रहकर भी आपका आशीर्वाद प्राप्त कर सकूँ और अपने जीवन और साधना के पथ को आगे सन्मार्ग की ओर अग्रसित कर सकूँ।

चरणो का मिला सहारा, धन्य हो गए,
गुरु चरणो को पाकर, शिष्य अनन्य हो गए।
चरणो में सारा संसार, झुक रहा है,
ऐसे गुरु के चरणो में, विश्व वरेण्य हो गए।।

गुरुवर आपकी आशीष और सान्निध्य २००६ में प्राप्त हुआ। गुरुवर उस वक्त आपका वात्सल्य देखकर प्राप्त हुआ कि किस प्रकार आप अपने शिष्यों को संभालते है चाहे वह वृद्ध हो या युवा।

जिस प्रकार कहा जाता है बच्चे बूढ़े एक बराबर होते हैं परन्तु बचपन एक कुम्हार की मिट्टी है जिसे आप मनचाहा आकार दे सकते है युवावस्था उस घड़ी को सुंदर ना आकार को सुंदरता प्रदान करना है जिसे आप संयम, तप, जिनेन्द्र अर्चना से संवार सकते हैं।

परन्तु बुढ़ापा वह घड़ा है जिसे आपको परिपक्व होने के बाद सभालने की आवश्यकता होती है। आचार्य श्री जिस प्रकार कई लोग कहते है कि वृद्धावस्था में दीक्षा की क्या आवश्यकता है परंतु यही वह अवस्था है जब जीवन को संभालने और सवांरने की आवश्यकता होती है।

जिस प्रकार शरीर को साफ करने के लिए मैल निकालना पड़ता है उसी प्रकार वृद्धावस्था में शरीर आत्मा से अलग होने वाला होता है तब उस आत्मा को भी तपाना पड़ता है क्योंकि उसके वगैर मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। बाह्य दोषों से रहित करना पड़ता है उस समय एक सच्चा गुरु ही होता है जो अंत तक उस शरीर को संभाल कर दोषों से रहित कर सही दिशा प्रदान करता है गुरुदेव का वात्सल्य वहीं है वह केवल युवा तपस्वीयों के लिए नहीं अपितु वृद्ध तपस्वियों के मोक्ष मार्ग को सही दिशा प्रदान कराता है।

सूरज के बिना सुबह नहीं होती, चाँद के बिना रात नहीं होती।
बादल के बिना बरसात नहीं होती, गुरु के बिना नैया भव से पार नहीं होती।।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

महामहोदधि विरागसिंधु

श्रमण मुनि आदित्य सागर
संघस्थ- श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज

शाश्वत श्रमण परम्परा का गौरव अवाच्य है। इस श्रमण-परम्परा में अनेकों आचार्यों ने अपनी विपुल योगदान प्रदान किया है और इस गतिमान भी किया है। एक तरफ जहाँ प्राकृत के प्रधान-पुरोधा कुंदकुंद स्वामी जैसे आध्यात्मिक श्रमणसूर्य हुए वहीं दूसरी ओर न्याय और भक्ति से ओत-प्रोत स्वामी समन्त भद्राचार्य, सिद्धांत के प्रतिपादक वीरसेन स्वामी हुए।

इसी श्रेणी में महानिमित्तज्ञ, वात्सल्य-रत्नाकर आचार्यवर्य विमलसागर जी के प्रमुख शिष्यों में मेरे दादा गुरु गणाचार्य विरागसागर जी हुए हैं। आचार्य देव की चर्या और चर्चा में मैंने वे सभी गुण देखे हैं जो मूलाचार जी में वट्टकेर स्वामी ने कहे हैं। यथा-

पियधम्मो दढधम्मो संविग्गोवज्जभीरु परिसुद्धो।
संगहणुग्गह-कुसलो, सददं सारक्खणाजुत्तो।।
गंभीरो दुद्धरिसो, मिदवादी अप्पकोदुहल्लोय।
चिरपव्वइदो गिहिदत्थो, अज्जाणं गणधरो होदि।।

इन गाथाओं में आचार्य देव की छवि झलक जाती है। क्षुल्लक से आचार्य पद की दीक्षा देनेवाले आप वर्तमान के एक ऐसे आचार्य है जो स्वहित और स्वप्रभावना से ज्यादा महत्व जिनशासन की प्रभावना को देते हैं।

अपने शिष्यों-प्रशिष्यों को बालभाग से लेकर षट्खण्डागम-धवला-महाबंध जैसे महान ग्रंथों का अध्ययन करानेवाले मेरे '**गुरुणां गुरु**' का जितना अनुशासन युवा-साधकों पर रहता है, उतना ही वात्सल्य और वैयावृत्त्य की भावना वृद्ध साधकों के प्रति रहती है।

तेजी से फैल रहा 'विराग-वट-वृक्ष' श्रमण-संस्कृति के लिए वर्तमान में फल और छाया देने में प्रधान है और भविष्य में भी प्रधान रहेगा।

इस श्रमण संस्कृति के लिए आचार्य देव ने श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी जैसी अनमोल चेतन कृतियाँ तो दी ही हैं साथ ही साथ संस्कृत-प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओं में शताधिक ऐसी अचेतन कृतियाँ दी हैं, जिनके लिए सकल जैन-वाङमय उनका युगों-युगों तक ऋणि रहेगा।

जैसी कृपा आचार्य देव की हमारे गुरुवर पर हुई, वैसी ही कृपा आचार्य विमलसिंधु की आचार्य विरागसागर जी पर हुई है। जब उन्हें ८.११.१९९२ को सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में आचार्य पद पर अधिष्ठित किया था। जिसको आज २५वर्ष होने वाले हैं।

जब हम पूज्यपाद के चरणों में दीक्षा के निवेदन के लिए अजमेर गए थे तब आपने कहा था- '८ नवम्बर २०११ का मुहूर्त अत्युत्तम है, आपके ज्ञान और चारित्र की अपूर्व वृद्धि होगी' उनके वचन पत्थर की लकीर के समान शाबित हुए। आचार्य देव का वरदहस्थ हमारे सर पर ऐसा ही बना रहे।

ज्यादा क्या कहें, जब स्वर्ग का स्वामी इन्द्र भी आप जैसे सूरी की स्तुति करने में असमर्थ है, फिर मेरे जैसा अबोध बालक आप समुद्र की एक बूंद स्तुति करने में कैसे समर्थ हो सकता हूँ, फिर भी भक्तिवशात् आप के गुणों का स्मरण करके त्रिभक्ति पूर्वक नमस्कार करता हूँ, वंदना करता हूँ।

सियवाय वयण जुत्तो, अणुवन अणुसासगो तहा धिज्जो।
समणेसु महासमणो, विराग-सूरि सया जयउ।। १।।
णाणा भासा णाणी, सगपर कल्लाण भावणा लीणो।
सुविसुद्ध चरियवंतो, विराग सूरी सया जयउ।। ३।।

सूरो जिद-उवसग्गो, णिम्मोहो उत्तमो महासमणो।
सिद्धंतागम कुसलो, विराग सूरी सया जयउ।।३।।
रुद्दट्ट-विप्पमुक्को, धम्माइ-सुद्धज्झाण-परिजुत्तो।
सुद्धो वर-गंभीरो, विराग सूरी सया जयउ।। ४।।
संवेग भावजुत्तो, वर-सुय-संवड्ढणे सया रत्तो।
दुब्भाव-णाण-रहियो, विराग सूरी सया जयउ।। ५।।
सम्मं घी संपण्णो, विसुद्धाइ-गणहराण आइरियो।
मदर द्वियो गुण-सहियो, विराग-सूरी सया जयउ।। ६।।
सुविशाल संघ सामी, आणासिद्धो तहेव सामण्णो।
सिद्धंत-चक्कवट्टी, विराग-सूरी सया जयउ।। ७।।
तंतिगो मंतिगो वा, तणु-मण-वयणेहिं जो परिसुद्धो।
समणाइरिय-पसिद्धो, विराग-सूरी सया जयउ।। ८।।

परोपकारी गुरुवर

आचारं पञ्चविहं चरहि चरविदि जो णिरदिचारं।
उवदिसदि य आचारं एसो आयावरं णाम।।

जो मुनि पांच प्रकार के आचार निरतिचार स्वयं पालते है, और इन पांचों आचारों में दूसरों को भी प्रवृत्त कराते हैं, वे आचार्य कहलाते है।

जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए, आत्मोन्नति की ओर ले जाए, सुख शांति की ओर ले जाए, जो शिष्य की सारी आपत्तियों का अपहरण कर ले, जो ज्ञान, बुद्धि, विवेक आदि सद्गुणों रूपी सुमनों से शिष्यों के जीवन को सुरक्षित कर दे। वही मेरे आचार्य भगवन् है, मेरे गुरुवर है।

जो वृक्ष शीत, उष्ण एवं वर्षा की असहन यातनाओं को सहन करते हुए भी प्रफुल्लित रहते हैं, यद्पि वृक्ष में फलित फल या पत्ते आदि का कण भी वह भक्षण नहीं करते फिर भी परोपकार के लिए आपत्तियों में भी झूमते लहराते हैं, और प्रफुल्लित रहते है। सरिताएँ अविरल गति से प्रवाहमान रहते हुए भी जल की एक बिन्दु का सेवन नहीं किया करती पर परोपकार के लिए पाषाण की चट्टानों से भी टकराती हैं। गगन बिहारी सूर्य सम्पूर्ण संसार को प्रकाश प्रदान करने के लिए तथा चन्द्रमा अपनी कांति बिखेरने के लिए रात दिन चक्कर लगाते है।

इसी प्रकार मात्र एक बार आहार लेने वाले मेरे आचार्य भगवन् प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज परोपकार की भावना से सत्य, अहिंसामय धर्म प्रभावना की भावना से जगत तल पर पैदल विहार करते है और अपनी हित-कित-प्रिय वाणी से अनेकांत और स्याद्वाद का मर्म समझाते हुए सुख शांति का मार्ग दर्शाते हैं। संयम का मार्ग दर्शाते है और संयमी पथ पर चलने वाले भव्यों को प्रेरित करते हैं, मोक्षमार्ग का पथिक बना देते है ऐसे परोपकारी गुरुवर के चरणों में। नमोस्तु।

मुनि आचरण सागर जी

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

देवों ने की वैय्यावृत्ति

श्रमणी आ. विशिष्टश्री माता जी

अहर्निश आध्यात्म साधना में निमग्न रहने वाले परम निस्पृही वीतरागी संतों को लौकिक चमत्कारों की कोई अपेक्षा नहीं रहती है उनकी साधना का प्रत्येक क्षण पारलौकिक आत्म अभ्युदय के लिए समर्पित होता है। यद्यपि यह सत्य है कि उनकी निकांक्षित निर्दोष साधना से उन्हें अनेक उपलब्धियाँ होती हैं किन्तु महामुनि विष्णुकुमार की भांति वे उन सभी ऋद्धि-सिद्धियों से विरक्त अपरिचित अंजान से रहते हैं तथा उनसे होने वाले चमत्कारों को प्रत्यक्ष देखकर भी अनदेखा कर देते हैं।

ऐसे ही महान संत हैं परम पूज्य अध्यात्म योगी, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी राष्ट्रसंत अपूर्व विस्मित करने वाले चमत्कारिक आयामों का गठन करती है किन्तु धन्य हैं ऐसे निस्पृही योगी को जो तनिक भी उस ओर ध्यान नहीं देते मात्र जब कभी प्रसंग वश बतलाते हैं तब कहीं शिष्य व भक्तों को उन बड़ी-बड़ी चमत्कारिक घटनाओं का ज्ञान हो पाता है।

सन् १९८८ में जब पूज्य आचार्य भगवन् का भव्य चातुर्मास भिण्ड चैत्यालय मंदिर में सानंद सम्पन्न हो रहा था उसी बीच एक दिन पूज्य आचार्य भगवन् का स्वास्थ कुछ ठीक नहीं था। बुखार के साथ-साथ सिर व शरीर में दर्द भी काफी अधिक हो रहा था। अत: पूज्य गुरुवर ने सभी महाराजों से कहा- कि आज मैं वैय्यावृत्ति नहीं कराऊँगा। आप लोग भी जिद न करें।

गुरु आज्ञा के सामने कोई कुछ भी नहीं कह सका किन्तु मन में तो सभी सोच रहे थे कि तकलीब में ही वैय्यावृत्ति की आवश्यकता होती है वही न कर सकें तो हम लोग किस काम के हैं। लेकिन गुरु आज्ञा के समक्ष कोई उपाय भी न था। उधर पूज्य श्री भी अपराहिक आवश्य क्रियाओं को पूर्ण कर रूम को अंदर से बंद कर लेट गये। कुछ ही समय बाद पूज्य श्री को लगा कि उनके पैर कोई दबा रहा है अत: उन्होंने मौन संकेत से मना किया तो कुछ क्षण के लिये वैय्यावृत्ति रूक गई किन्तु कुछ देर के बाद पुन: ऐसा ही हुआ तब आचार्य भगवन् ने सोचा मना करने पर भी कौन वैय्यावृत्ति कर रहा है देखें अत: उन्होंने बुखार की ठण्डी के प्रतिकार के लिये ओढ़ी गई चटाई को हटाकर देखा तो वहाँ कोई नहीं दिखा, हाँ एक तेजपुंज आभा ऊपर की ओर जाती दिखी।

प्रात: स्तोत्र भक्ति के बाद जब मौन खुला तो गुरुवर ने सबसे पूछा कि वैय्यावृत्ति करने कौन आया था। सभी ने मना किया, कुछ मुनिराजों ने कहा- भगवन कमरे तक तो गये थे किन्तु कमरा अंदर से बंद था इसलिए वैय्यावृत्ति नहीं कर सके। तब पूज्य आचार्य श्री ने कहा- वैय्यावृत्ति तो किसी ने की है और जब सारी बात सुनाई तो सभी को आश्चर्य हुआ और सभी ने एक स्वर में कहा- भगवन् कमरा बंद होने के कारण हम शिष्यगणों ने तो आपकी वैय्यावृत्ति नहीं कि किन्तु यह निश्चित रूप से सत्य है कि देवों ने आपकी वैय्यावृत्ति की है क्योंकि वह प्रकाश पुञ्ज कोई और नहीं अपितु आपकी साधना से प्रभावित होने वाला कोई देव ही था। तभी तो आपके जीवन में एक नहीं अनेकों ऐसे चमत्कारिक प्रसंग देखे जाते हैं जिनसे सभी को आश्चर्य उत्पन्न होता है।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. बृजेन्द्र कुमार जैन,(वीरू) देवेन्द्रनगर

मन बगिया से चुनकर लाये भक्ति प्रसून समर्पण हैं,
निज स्वरूप का दर्श कराने गुरुवर ऐसा दर्पण हैं।
वैसा ही प्रतिबिंव झलकता हमने जैसा निहारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

जलचर थलचर और गगनचर इन सबका परिमंडल है,
ये सब उनको वंदन करते जो धारे पिच्छी कमंडल हैं।
जिनवर बनने जिनमुद्रा को तुमने अंगीकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

नभ में उड़ता नभचर देखो दोनों अपने पंख पसार,
है स्वतंत्र उन्मुक्त गगन में मानों मन में करे विचार।
धन्य हो गया जब से मैने गुरुदेव को निहारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

जग की इस भौतिक माया में पलभर का विश्वास नहीं,
कालचक्र गतिमान सदा वह किसी व्यक्ति का दास नहीं।
अंतिम समय में कोई भी तुमको नहीं बचावन हारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

गुरु की निंदा जो करते वे कभी तरण न पाऐगे,
चाहे कोटि जतन कर लें पर पंडित मरण न पाऐगे।
गुरु निंदा करने वालों के जीवन में अंधियारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

गुरुवर सम्यक् पथ का दर्शन शिष्यों को करवाते हैं,
जो लेता इनका आलंबन भव से पार लगाते हैं।
गुरुदेव ने अपने शिष्यों के जीवन को संवारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

अष्टद्रव्य से पूजन करता मुक्ति सुधा रस पाने को,
बचे हैं जो क्षण व्यर्थ न जाए इनको सफल बनाने को।
न्यायमूर्ति हो न्यायकरो चरणों में डेरा डारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

भव दावानल से आहत हूँ शीतलता पाने आया,
चरणों में अर्पित करने का घिस घिस कर चंदन लाया।
भव आताप को शांत करो चरणों में तुमसे लगारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मेरा अनुभव ---- गुरुदेव के साथ....

ऐसा सरल सन्त हमने पहले कभी नहीं देखा

''शब्दों में है कठिन बताना अपने हृदयोद्‌गार, ऐसा सरल संत तो देखा हमने पहली बार।
मृदुभाषी वात्सल्यमयी, वैराग्यमूर्ति सुखकार, हे विराग सिंधु चरणों में नमन कोटिश बार।।''

आचार्य शिरोमणि उपसर्ग विजेता ज्ञान दिवाकर गुरुदेव श्री १०८ विरागसागर जी के चरणों में साष्टांग नमोस्तु। चारों तरफ हर्षोल्लास का वातावरण। भक्तों में खुशी की लहर बेलगछिया मंदिर जी में आगमन पर गुरु पूर्णिमा के पावन दिन वात्सल्यमूर्ति गुरुदेव के प्रथम दर्शन। मुख पर अद्वितीय तेज, अधरों पर मीठी मुस्कान और मृदुवाणी- ऐसी है मेरे गुरुवर का स्वरूप और सरल तो इतने जिसे शब्दों में बता पाना असंभव है। प्रथम दर्शन के पश्चात् मन को बहुत शांति मिली किन्तु नैनों की प्यास उतनी ही बढ़ गई। अत: रोजाना माँ पिताजी को लेकर गुरुदेव के दर्शन हेतु आना जाना शुरु हुआ। पिताजी की तबीयत गत कुछ माह से बहुत ज्यादा खराब थी हर संभव कोशिश के बाद भी आशा की कोई किरण नजर नहीं आ रही थी। इसी दौरान मौसी के सुझाव अनुसार और पिताजी की तबीयत में कोई सुधार न आता देख हमने गुरुदेव से बात की और यदि संभव हो तो समाधिमरण की भावना प्रकट की। दूरदर्शी गुरुदेव शायद पहले से ही सब देख चुके थे उन्होंने तत्काल हमें वहीं मंदिर जी में रहने हेतु सुझाव दिया ओर व्यवस्था करवा दी। गुरुद आज्ञानुसार वहीं एक कमरे में मैं माँ और पिताजी आ गए। जीव का भव सुधरना हो तो समय स्वयं उसे सही स्थान पहुँचा देता है। वैसे तो पिताजी बहुत ज्यादा धार्मिक कभी नहीं रहे। किन्तु मंदिर जी में रहते हुए और गुरुदेव के संसर्ग में आकर भाव में बदलाव आए। णमोकार का जाप करते रहते और खिड़की के सामने जो भगवान की प्रतिमा जी थी उसे निहारते और कहते- मैं अब तुम्हारी शरण हूँ, मुझे मुक्ति दो।

४-५ दिन अनंत कष्ट में बीता। शरीर पूरी तरह साथ छोड़ने पर आतुर था। गुरुदेव के दर्शन, प्रवचन का लाभ नित्य प्रति मिल रहा था। पिताजी की तबीयत की खबर मैं उन्हें समय समय पर पहुँचा देता था। २ अगस्त की सुबह लगा जैसे कष्ट अपने चरम पर है। आहार त्याग तो वे सबकुछ कर चुके थे। दोपहर २.३० बजे बारिश में भीगते हुए मैं गुरुदेव के पास पहुंचा और उन्हें सारी व्यथा कर सुनाई। वात्सल्यमूर्ति गुरुदेव बिना एक क्षण गंवाएँ मेरे साथ चल दिये। पिताजी की हालत देखते ही वे समझ गये कि पंछी के उड़ने का वक्त आ चुका। उन्होंने इच्छा जाननी चाही। विधि का विधान तो देखों जो जीव कभी बहुत ज्यादा धर्म कर्म में नहीं रहा उन्होंने दीक्षा हेतु अपनी भावना व्यक्त की। कोई पूर्वभव का अनन्त पुण्य ही था कि पिताजी ने संल्लेखना समाधि हेतु घर परिवार परिग्रह सबकुछ त्याग किया और मुनि दीक्षा हेतु गुरुदेव के श्री चरणों में श्रीफल समर्पित किया।

पुण्य का जोर इतना प्रबल था कि दो प्रतिमा से सात, सात से दस फिर क्षुल्लक और अन्त में दिगम्बर मुनि दीक्षा। ये सब किसी अतिशय से कम नहीं था। पिताजी अब श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वपुण्य सागर बन चुके थे। समस्त संघ उन्हें नमोस्तु कह रहा था और कुछ क्षण पश्चात् संल्लेखना अन्तर्गत उनका समाधिमरण हो गया। जिसे हेतु हम गुरुदेव के पास आये थे, वो पूरा हुआ और आशा से कहीं अधिक।

सरलता की मूर्ति गुरुदेव अपने भक्तों के कल्याणार्थ सदैव तत्पर रहते हैं। ऐसा सरल संत हमने पहले कभी नहीं देखा। गुरुदेव की महिमा बखान करना सूरज को दीपक दिखाने के बराबर है। ये सिर्फ मेरा अनुभव और हृदयोद्‌गार है जो आज तक पहुँचाने की कोशिश मात्र हैं। गुरुदेव यूँ ही अपने भक्तों का कल्याण करते रहें और मुक्ति पथ के राही गुरुवर के पथ पर चलकर हम भी एक दिन मोक्ष महल में निवास करें यही मंगलकामना है।

शब्दों में कहाँ संभव गुरुवर, महिमा बखान कर पाऊँ मै।
जितना भी तुमको जाना है, बस उतना ही दोहराऊँ मैं।।
सागर की गहराई को भी भला निखिल कभी कोई माप सका।
गुरुवर विरागसागर रूपी महासागर में जा समाऊँ मैं।।

गुरुदेव के चरणों में सादर नमोस्तु-३ एवं समस्त संघ को कोटिश: नमन

निखिल कासलीवाल, कलकत्ता

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका- ऐसे कैसे ?

समाधान- बिना सम्यक्त्व की उपलब्धि को किसमें गर्भित करते मिथ्यात्व में ही तो।

शंका -यदि युगपत् मानें तो ?

समाधान- तब तो घटित हो ही जायेगी अर्थात् अभेदरत्नत्रय युगपत् होता है अतः जिन्हें अभेदरत्नत्रय पाया जाता है उन्हें आत्मोपलब्धि भी एक साथ पायी जाती है इसीलिये हमने उपरोक्त समाधान में निश्चय या वीतराग यह विशेषण जोड़ा।

शंका- उपलब्धि किसे कहते है ?

समाधान - देखिये **(सि.वि.वृ. १/२/८/१४)**

उपलभ्यते अनया वस्तुतत्त्वमिति उपलब्धिः अर्थादापन्ना तदाकारा च बुद्धिः।

अर्थ- जिसके द्वारा वस्तु तत्त्व उपलब्ध किया जाता है या ग्रहण किया जाता है वह उपलब्धि है, पदार्थ से उत्पन्न होने वाली तदाकर परणत बुद्धि उपलब्धि है।

इसी बात का खुलासा **(पं.का.त.प्र.गा.३९)** में कहा है-

चेतयन्ते अनुभवन्ति उपलभन्ते विन्दंतीत्येकार्थाश्चेतनानुभूत्युत्युपलब्धि वेदनानामेकार्थत्वात्।

अर्थ - चेतता है, अनुभव करता है, उपलब्ध करता है और वेदता है, ये एकार्थ है, क्योंकि चेतना, अनुभूति, उपलब्धि ओर वेदना एकार्थक है।

शंका - उपलब्धि किस कर्म के क्षयोपशम से होती है ?

समाधान -(प.का.ता.वृ. ४३/२६/९) में कहा है कि-

मतिज्ञानावरणीय क्षयोपशम जनितार्थ ग्रहण शक्ति रूप लब्धिः।

अर्थ- मति ज्ञानावरणीय (कर्म) के क्षयोपशम से उत्पन्न अर्थ ग्रहण करने का शक्तिक रूप लब्धि को ही उपलब्धि कहते हैं।

शंका- अंतरंग में श्रुतज्ञान के क्षयोपशम के बिना क्या द्रव्य श्रुतज्ञान हो सकता है ?

समाधान- श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के बिना तो बहिरंग श्रुतज्ञान भी नहीं हो सकता है। अतः आध्यात्मिक भाषा में श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम को भी बहिरंग द्रव्य श्रुतज्ञान ही जानता है।

शंका- ऐसा क्यों कहते हो ?

समधान- क्योंकि क्षयोपशम रूप श्रुतज्ञान तो मिथ्यादृष्टि को भी पाया जाता है।

शंका- मिथ्यादृष्टि को श्रुतज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम नहीं पाया जाता है उसे तो कुश्रुतज्ञानावरण कहना चाहिए ?

समाधान- ध्यान रखिये ज्ञानावरण कर्म के पांच ही भेद कहे हैं उसमें सम्यक् या मिथ्या के भेद नहीं हैं देखिये **(त.सू.अ.८/सू.६)**

मतिश्रुतावधिमन: पर्यय केवलानाम्।

ज्ञानावरण कर्म के पांच भेद हैं मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधि ज्ञानावरण, मन:पर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण।

शंका- 'विपर्यश्च' यह सूत्र भी तो कहा है ?

समाधान- यह सूत्र ज्ञान के विषय में कहा है कि ज्ञान मिथ्या भी होते है।

शंका- यदि ज्ञान मिथ्या है हो फिर उसके आवारक कर्म भी मिथ्या होना चाहिए ?

समाधान- अगर ऐसा माना जाएगा तो फिर ज्ञानावरण कर्म के पांच भेद नहीं आठ भेद हो जायेंगे।

शंका - हो जाने दो ?

समाधान - तो फिर आगम तथा जिनदेव के वचन गलत ठहरेंगे, फिर उनका सम्यग्ज्ञान भी गलत होगा, क्योंकि सम्यग्ज्ञान वस्तु को न्यूनाधिकता से रहित जानता है। देखिये **(र.क.श्रा.गा.४२)** में कहा भी है कि-

अन्यूनमनतिरिक्तं याथातथ्यं विना च विपरीतात्।
नि: संदेहं वेद य, दाहुस्तज्ज्ञान मागमिन:।।४२।।

अर्थ- जो ज्ञान, वस्तु के स्वरूप को न्यूनता रहित, अधिकता रहित, विपरीतता रहित और संदेह रहित, जैसा का तैसा जानता है उस ज्ञान को आगम के ज्ञाता श्रुतकेवली सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

हँसते रहो हँसाने के लिए

1. **व्यक्ति**- आप रेस में हमेशा फस्ट कैसे आते हैं ?
   धावक- सोच लेता हूँ मेरी पत्नी पीछे आ रही है।
२. **पुजारी** - आपकी खूब पूजा की पर कुछ मिल क्यों नहीं ?
   भगवान - पूजा की है क्या ?
   पुजारी - रोज।
   भगवान- गलत, तुम तो देखते रहते थे कि झोली में कुछ आया कि नहीं इसलिए झोली खाली रही, पूजा का बहाना चलता रहा।
३. **पापा** - बेटा तुम बड़े होकर प्रधानमंत्री बनोगे ?
   राजा - नहीं।
   पापा - क्यों ?
   राजा - फिर आपका घर कौन सम्हालेगा।
४. **राशि**- १००००००/- दो, कल वापिस दूँगी।
   मनोज- क्यों ?
   राशि- दिखाना है, मेहमानों को कि मैं अमीर हूँ।

संकलन- कु. मान्या जैन, कोलकाता

हिंसक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग ना करे

१. पाउडर– इसमें लेमूर जाति व लोरिस जाति के बंदर की आँखों व यकृत का प्रयोग किया जाता है और इसके लिए ही उनकी हत्या की जाती है।

२. नेल पॉलिश– (१) इसमें बंदर, खरगोश, गाय एवं व्हेल मछली का खून मिलाया जाता है। (२) टेल्यूशन, फर्मिलडी हाइड्रेरिसन, आइसो प्रोपाइल, नाइट्रो सेयूलोन एल्कोहल, टाइटेनियम ऑक्साइड, स्प्रिट एसीटिन आदि हानिकारक पदार्थ होते हैं। (३) फार्मेलडी हाइड्रेरिसन जलन पैदा करता है। (४) शीशी पर टोल्यूशन नामक रसायन लिखा रहता है जिसका आशय मिथाइल बैंजीन से है जिससे सिरदर्द, चक्कर आना, उल्टी आना, भूख न लगना, श्लेष्मा झिल्ली में जलन आदि होता है।

३. लिपस्टिक– (१) इसमें बन्दर, खरगोश, गाय, व्हेल मछली आदि का खून मिलाया जाता है। (२) लिपिस्टक में सीसा, केड़मियम, मोम, विस्मथ, एयरेथ, ऐओसिन, टारड्रेजिन और न घुलने वाले पदार्थ वरंग होते हैं जो शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। (३) मधु-मक्खियों को छत्तों से भगा दिया जाता है और हजारों की संख्या में उन्हें मार दिया जाता है। इनके छत्तों से मोम प्राप्त होती है जिसे लिपस्टिक के उत्पादन में उपयोग लिया जाता है। (४) लिपिस्टक में चमक लाने के लिए सुअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता है।

४. सेंट– (१) बिज्जू, बिल्ली से छोटा होता है इसे बेतों से मारा जाता है ताकि उद्वेलित होने से इसकी यौन ग्रंथि स्त्रावित हो जाये फिर उस स्त्राव को तेज धार की चाकू से खरोंचा जाता है वह सुगंधित होता है जिससे अनेक प्रकार के सेंट बनाये जाते हैं।

(२) व्हेल मछली को मारकर इवर गीस नामक इत्र बनाया जाता है।

(३) सबसे बड़ी ६३ फुट की व्हेल मछली चारों तरफ से घिरकर चोट सहती है और दे देती है अपनी जान। जिससे बनती है सुगंधित सामग्री एवं मिसाइलों में लगाया जाने वाला तेल।

(४) सिवेट-इसे गंध-बिलाब (सिवेट) की गदा-थैली में स्थित ग्रन्थियों (ग्लैण्ड्स) को कतर कर तैयार किया जाता है। इस काम के लिए बिलाव को पिंजरे में बन्द रखा जाता है और उसके साथ अत्यन्त क्रूर सलूक होता है इसका इत्र आदि सुगन्धित डिब्बों में स्थिरीकारक (फिक्सेटिव्ह) के रूप में उपयोग होता है।

(५) एम्बरग्रीस-एक मोम जैसा पदार्थ जिसे स्पर्ग व्हेल (मोमी) तिमि (मछली) की आंतों से प्राप्त किया जाता है। इसका इत्र आदि सुगंधित द्रव्यों के उत्पादन तथा खाद्य पदार्थों एवं मदिरा (शराब) आदि को सुगन्धित करने में होता है।

५. फर की टोपी– (१) कराकुल शिशु की खाल टोपी या अन्य वेशभूषा बनाने के लिए काम आती है। (२) कराकुल तथा भेड़ को बेतों से सूटा जाता है ताकि उसका गर्भपात हो जाये और कसाइयों को वक्त के पहले कराकुल भ्रूण मिल जाए। (३) इसकी खाल बहुत मंहगे दामों पर बेची जाती है क्योंकि उसके फर बहुत नरम होते हैं। (४) भालू के २ से ४ दिन के शिशु को मारकर उसकी नरम खाल से टोपियाँ बनाई जाती हैं। (५) असंख्य खरगोशों को मारकर फर पोशाकें और फर के थैले बनाये जाते हैं। (६) फर सुरक्षित रहे इसके लिए कुछ पशुओं को पैरों से कुचलकर मारा जाता है।

६. बीबरों की खाल से बना कोट– (१) बीबर, चूहे जैसा छोटा जंतु है। इसके मृत शरीर से निकाला गया तेल सौन्दर्य प्रसाधन में काम आता है और खाल से कोट बनाया जाता है। (२) कोट के लिए कम से कम ६० बीबर मारे जाते हैं।

७. रेशम (सिल्क, कोशा) बनाने में- (१) सिल्क की एक साड़ी बनाने में ५००० कीड़ों की हत्या की जाती है। (२) रेशम के कीड़े को उबलते पानी में डालकर उसकी दम घोंटकर मार डालते हैं ताकि बाहर निकलते समय रेशम के टुकड़े न हो जाये। (३) १०० ग्राम रेशम के वस्त्र में १५०० कीड़े मारने पड़ते हैं।

८. चमड़े के जूते-चप्पल, पर्स, मिनी बेग, हैंडबैग में क्या दोष है ? -

(१) चमड़ा पाने के लिए जीवित गाय, बैल पर उबलता हुआ पानी डाला जाता है जिससे चमड़ी फूल जाती है, फिर उसकी चमड़ी को उखाड़ लिया जाता है। (२) इतने भीषण कष्ट सहते हुए गाय, बैल मर जाते हैं। (३) अत: चमड़े के उपयोग करने वाले को महान् हिंसा का दोष लगता है। (४) साथ ही चमड़े में हर समय गाय बैल आदि की जाति के ही सूक्ष्म समूर्च्छन जीव पैदा होते रहते हैं। अत: चमड़े की वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

९. जुएँ मारने वाले तरल पदार्थ को उपयोग से मस्तिष्क कैन्सर होता है।

१०. ब्रश- कई किस्म की रंगाई ब्रश, शेविंग ब्रश, हेयर ब्रश, कलाकारी ब्रश बनाने के लिए सुअर की भौहे, पलकों और शरीर के बालों को नोच लिया जाता है।

११. सांप- प्यारा, मुलायम, खूबसूरत जानवर जिनका उपयोग सूप, दवा, शराब, पर्स, चप्पल कई चीजों में निर्माण में बड़ी निर्दयता के साथ मारकर किया जाता है। वृक्ष के तने पर कीलों से ठोककर तेज धार चाकू से चीरते हैं जिससे खून के फव्वारे निकलते हैं।

१२. मगरमच्छ- मगरमच्छ को चालाकी से पानी से बाहर निकालकर उसे छटपटाने के लिये छोड़ देते हैं और तभी नाक में पैना छुरा घोंपकर मार डालते हैं फिर उसकी खाल से महिलाओं के पर्स और डिजाईन से सूटकेस बनते हैं।

१३. गन्ध माजीर- रोयेंदार खूबसूरत जानवर तड़फा कर खींची जाती है खाल, बनाने टोपियाँ, कोट, स्वेटर, खिलौने, पर्स, सीट, कवर्स प्रतिवर्ष ढाई करोड़ की मौत।

१४. आयवरी (हाथी दाँत)- हाथी दांत से बनी वस्तुएँ अत्यन्त क्रूर और हिंसक उत्पाद है। इसे हाथियों को जहर देकर मारकर फिर दांत प्राप्त किया जाता है और इससे तरह-तरह की सजावटी वस्तुएँ (खिलौना, चूडियाँ, इअररिंग्ज आदि) बनाई जाती है।

१५. एमीलेस- सुअर के अग्राशय (पैंक्रियाज) से तैयार एक इंजाइम (विकर) जिसका उपयोग स्टार्च को शर्करा में परिवर्तित करने के लिए होता है। इसका कॉस्मेटिक्स (श्रृंगार प्रसाधन) तथा दवाईयों में इस्तेमाल होता है।

१६. कछुआ को उल्टा कर उसके कोमल अंगों के टुकड़े करके उसकी चर्बी से तेल बनाकर सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री बनाई जाती है।

१७. लोरिस बंदर- इसके हृदय तथा आंख को पीसकर श्रृंगार की सामग्री बनाई जाती है।

संस्कार सुरभि से साभार

महत्वपूर्ण जानकारी

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर ससंघ कहाँ विराजमान हैं, जानने के लिए Google अथवा किसी भी इंटरनेट Browser पर जाकर टाईप करें।

Viragsagar.trackerbox.co.in जो Location दिखाएँ उसे बड़ा करके उसके विषय में तथा आस-पास की Location के विषय में जाना जा सकता है।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

ऑव (पेचिश)
(Dysentery)

संकलन- श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माताजी

कारण- यह रोग मुख्यत: मक्खियों द्वारा फैलता है। रोग के रोगाणु रोगों के मल में विद्यमान रहते हैं। मक्खियाँ इस मल पर बैठकर रोगाणुओं को अपने साथ ले जाती है और खाने-पीने की वस्तुओं पर बैठकर इन्हें वहाँ छोड़ देती है। उन वस्तुओं को खाने वाले के शरीर में रोगाणु प्रवेश कर रोग उत्पन्न कर देते है। कच्चा व अनपचा अन्न, जब लम्बे समय तक पेट में रहता है तो पाचन सस्थान बिगड़ जाता है तथा ऑव व पेट के अनेक रोग पैदा हो जाते है।

लक्षण- पेचिश में बार-बार दस्त लगते है तथा पेट में ऐंठन होती है। मल के साथ श्लेष्मा तथा कभी-कभी रक्त भी विसर्जित होता है। ये दो प्रकार की होती है- १. पेट अत्यधिक ऐठता हैं। दस्त के साथ रक्त अधिक जाने के कारण रोगी निर्बल एवं ज्वर ग्रस्त होता है।

२. इसमें पेट में मरोड़ होकर ४ से ६ तक दस्त आते हैं ऑव निकलता है। ऐठन के साथ लाल या सफेद ऑव वाले दस्त दोनों ही लगते हैं।

उपचार-

- अनार का रस पीना लाभदायक है।
- आम की गुठली को पीसकर छाछ के साथ इस रोग में पीने से लाभ होता है।
- सौंफ को गर्म जल में ऊवालकर छान लें और थोड़ा सा काला नमक डालकर २-३ बार पीने से पेचिश में लाभ मिलता है।
- जामुन वृक्ष की छाल १० ग्राम लेकर काढा बनायें। उसमें २ तोला चासनी मिलाकर पीने से अतिसार एवं पेचिश में लाभ होता है।
- शाम को भिगोया सुबह छानकर आँवले का पानी पीने से पुराने से पुराना पेचिश ठीक हो जाता है।
- कागजी नीबू की शिकन्जी, नमक बूरे का पानी, दही के साथ मेथी खाना लाभदायक है।
- लगभग १ ग्राम सोंठ चूर्ण गरम पानी के साथ लेना फायदेमंद होता है।
- इमली के बीजों के ऊपर का लाल छिलका पेचिश, अतिसार की उत्तम औषधि है।
- ८-१० काली मिर्च पीसकर अथवा चबाकर खायें एवं एक गिलास पानी पीएँ। लाभ होगा।
- पुरानी पेचिश में बेल का सूखा गूदा बहुत फायदा करता है। सूखी बेल को पानी में फूला कर लें।
- पेचिश होने पर पके केले में थोड़ा सा सीका हुआ जीरा एवं एक चुटकी काला नमक मिलाकर सेवन करें।
- खूनी पेचिश में मट्ठा के साथ चुटकी भर जावित्री चूर्ण लेना रामवाण है।
- अनारदाना, सौफ, धनिया तीनों बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण कर लें। २ ग्राम चूर्ण में १ ग्राम शक्कर मिला कर ३-४ बार सेवन से खूनी दस्त, खूनी ऑव में आराम मिलता है।
- ऑव के रोगी को भोजनोपरान्त जीरा, सेंधा नमक मिला छाछ सेवन लाभ देता है।
- पाचन शक्ति कमजोर होने के कारण भोजन अच्छी तरह नहीं पचता, जिससे मल में दुर्गन्ध आने लगती हैं। ऐसी स्थिति में काली मिर्च, जीरा, सोंठ, सेंधा नमक, पीपल को समान मात्रा में लेकर पीस लें। प्रतिदिन भोजनोपरान्त एक चम्मच पानी के साथ लें। भोजन पचेगा और पाचन क्रिया भी सही रहेगी।

- ❖ सुखाए हुए सन्तरे के छिलके, सुखे मुनक्के के बीज समान मात्रा में घोटकर पिलाने से रोगी के दस्त बन्द हो जाते हैं। ३-४ दिन लगातार लेने से ऑव बंद हो जाती है।
- ❖ जिस ऑव रोग में मल की प्रवृत्ति कम व पेट में गैस अधिक हो तब छोटी हरड़ भुनी हुई अजवायन, सोंठ पीपल, चित्रक व काला नमक को समान भाग लेकर बनाया गया चूर्ण बहुत लाभदायक है। इसे १-१ चम्मच दिन में ३ बार पानी के साथ लेना चाहिए।
- ❖ तुलसी के पत्तों को शक्कर के साथ खिलाने से पेचिश दूर होती है।
- ❖ ईसबगोल गर्म दूध में फूलाकर शाम को लें। प्रात: दही में भिगोकर इसमें नमक, सोंठ, जीरा मिलाकर लें। ४ दिन लगातार सेवन से ऑव आनी बन्द होती है।
- ❖ ऑव मरोड़ होने पर १ चम्मच ईसबगोल २ घंटे ठण्डे पानी में भिगोकर नित्य ४ बार दें।
- ❖ कच्चे केले का रस घी, जीरा, काली मिर्च और सेंधा नमक मिलाकर एक सप्ताह तक लेते रहने से आमातिसार दूर हो जाता है।
- ❖ एक कप पानी में १० ग्राम गोंद डालकर गलाऐं। गलने पर मसल-छानकर रोगी को पिलाने से लाभ होता है।

विरागामृत

(१२.९.२०१९ वेलगछिया कलकता)

१. जब तक मनुष्य के अन्दर विकार है वह बाहर ही बाहर धूमता है मंदिर में भगवान के दर्शन नहीं कर पाता।
२. विकारी व्यक्ति मंदिर में भी जायेगा तो उसकी दृष्टि भगवान पर कम महिलाओं या पुरुषों पर उसकी दृष्टि अधिक पहुंचेगी।
३. मंदिर में प्रवेश वही कर पाता है या भगवान के दर्शन वही कर पाता है। जिसकी दृष्टि बाहर से हट गई है जिसके अन्दर भगवान के दर्शन की रूचि है और जिसे संसार से रूचि है उसके लिये मंदिर का द्वार बंद है।
४. धर्म में रूचि है तो भगवान का द्वार खुला रहता है।
५. पूजा की और भगवान की ओर ध्यान ही नहीं गया तो उस पूजा से कुछ प्राप्ति नहीं होगी।
६. वाहर के संस्कार बन्द हो तो अन्दर के संस्कार हो पायेंगे।
७. अन्दर की दृष्टि को प्राप्त करने के लिये ब्रह्मचर्य महावृत्ति बनना पड़ेगा और महाव्रती नहीं बन सकते तो ब्रह्मचर्य प्रतिमाधारी बनना पड़ेगा। जहाँ पत्नी पति वह भेद मिट जाता है।
८. यदि ब्रह्मचर्य प्रतिमा भी नहीं ले सकते तो ब्रह्मचर्य अणुव्रत ले लेंवे। जिसमें अपनी पत्नी ही पत्नी है शेष सभी महिलाएँ माता बहिन हैं।
९. एक पत्नी/ पति व्रत धारणकर अपने मन के विकार को एक सीमा में कर लें। जिससे वर्तमान में जो विसंगतियाँ पैदा हो रही है वह नहीं होगी।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

नवम्बर माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.११.१९३८	डवोक उदयपुर (राज.), मुनिश्री विश्वभानु सागर जी
समाधि दिवस	१२.११.२०१२	जयपुर (राज.) मुनिश्री विश्वजीत सागर जी महाराज, श्रमणी आ. विप्रमुक्ताश्री माता जी।
दीक्षा दिवस	२.११.२०१७	दिल्ली, मुनिश्री नियंधर सागर जी, मुनिश्री विश्वदक्ष सागर जी, मुनिश्री विश्वभानु सागर जी, मुनिश्री विश्वहित सागर जी, मुनिश्री विश्वधीर सागर जी, मुनिश्री विश्वभद्र सागर जी, मुनिश्री विनिवेष सागर जी, आ. विजिगिसाश्री माताजी, आर्यिका विजिज्ञासाश्री माताजी, ऐ. विश्वजिय सागर जी, ऐलक विदक्षसागर जी, क्षुल्लक विनियोग सागर जी, क्षुल्लक विश्वज्ञेय सागर जी, क्षुल्लक विश्वानन सागर जी, क्षुल्लक विश्वोत्तर सागर जी, क्षुल्लक विश्वानुत्तर सागर जी, क्षुल्लक विश्वरक्ष सागर जी, क्षुल्लक विवक्षित सागर जी, क्षुल्लिका विपदमाश्री माताजी, क्षुल्लिका विक्षमाश्री माता जी, क्षुल्लिका विकण्ठ श्री माता जी, क्षुल्लिका विगम्याश्री माता जी।
मुनि दीक्षा दिवस	९.११.१९६३	शिखर जी, पू. आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज
आचार्यपद	८.११.१९९२	द्रोणगिरि, प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
जन्म दिवस	९.११.१९७६	शाहगढ, श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी महाराज
जन्म दिवस	९.११.१९७९	लखनादौन, मुनिश्री विश्रुतसागर जी महाराज
आचार्यपद	१०.११.(तिथि)	द्रोणगिरि, प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
जन्म दिवस	१०.११.१९६०	भिण्ड (म.प्र.), ग.आर्यिका विशाश्री माताजी
समाधि दिवस	१२.११.२०१७	वसुन्धरा, आ. विशालश्री माताजी
दीक्षा दिवस	१३.११.२०१७	हिसार (हरि.) क्षुल्लिका विशीलाश्री माताजी
आचार्यपद	१४.११.(तिथि)	टुडला, आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज
दीक्षा दिवस	१५.११.१९९९	भिण्ड (म.प्र.), आर्यिका विरक्तश्री माता जी, आर्यिका विनीतश्री माताजी।
जन्म दिवस	१५.११.१९७२	टीकमगढ़ आर्यिका विदुषीश्री माता जी
जन्म दिवस	१५.११.१९७३	जतारा, आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज
जन्म दिवस	१७.११.१९९१	कटनी, आर्यिका विद्वतश्री माता जी
पुण्य तिथि	१७.११.२०१८	श्री सम्मेद शिखर जी, मुनिश्री विश्वानन्दसागर जी
दीक्षा दिवस	२१.११.१९९१	श्रेयांसगिरि, श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी
जन्म दिवस	२४.११.१९९५	ग्वालियर, ऐलक विदक्षसागर जी महाराज
दीक्षा दिवस	२४.११.२०१५	पथरिया, मुनिश्री विश्वदृगसागर जी, मुनिश्री विश्वनायक सागर जी, मुनिश्री विकौशल सागर जी, मुनिश्री विश्वसूर्य सागर जी, आर्यिका विजितश्री माताजी, आ. विमोचनश्री माताजी, आ. विकुन्दनश्री माताजी, आ. विगुन्जनश्री माताजी, ऐलक विनयंधर सागर जी, क्षुल्लक विश्वभद्र सागरजी, क्षुल्लक विनिवेष सागर जी, क्षुल्लिका विरजश्री माता जी, क्षुल्लिका विरजाश्री माताजी।

समाधि दिवस	२५.११.२०१३	देवली (राज.) मुनिश्री विश्रेयसागर जी महाराज
समाधि दिवस	२५.११.२०१६	चंगम (तमिल) क्षुल्लक विश्वात्मा सागर जी
दीक्षा दिवस	२७.११.२०१७	टोंक (राज.) आ. ज्ञप्तिश्री माता जी, आ. ज्ञेभ्याश्री माताजी, आ. ज्ञायकश्री माताजी, आ. ज्ञेयकश्री माताजी।
जन्म दिवस	२७.११.१९८७	बमन्होरा, आ. विरक्षणाश्री माताजी
मुनिदीक्षा	२८.११.१९१३	कुंथलगिरि, प.पू. आचार्य आदिसागर जी अंकलीकर
पुण्य तिथि	२८.११.२०१६	भिण्ड, मुनिश्री विश्वारूचि सागर जी महाराज
जन्म दिवस	२९.११.१९८०	भिण्ड, आ. विजेताश्री माता जी
दीक्षा दिवस	२९.११.२००७	इन्दौर, मुनिश्री मनोज्ञसागर जी, मुनिश्री प्रशमसागर जी, मुनिश्री सुप्रभसागर जी।
समाधि दिवस	२९.११.२०१३	पुष्पगिरि, क्षुल्लक श्री विश्वमैत्रेयसागर जी महाराज
दीक्षा दिवस	३०.११.२००१	गया (विहार) क्षुल्लक विधेयसागर जी, क्षुल्लक विश्वरत्न सागर जी, क्षुल्लक विश्वभूषण सागर जी।
समाधि दिवस	३०.११.२०१७	इन्द्रपुरम, आर्यिका विशोहीश्री माताजी
दीक्षा दिवस	८.११.२०११	मुनिश्री अरजित सागर जी, मुनिश्री आदित्यसागर जी, मुनिश्री अप्रमित सागरजी, मुनिश्री आस्तिक्य सागर जी।

कार्तिक माह के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

१४ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण १	श्री अनन्तनाथ जी गर्भ कल्याणक
१७ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण	श्री संभवनाथ जी ज्ञान कल्याणक
१८ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण ४	रोहिणी व्रत
२१ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण ८	अष्टमीव्रत
२६ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण १३	ध्यान तेरस, श्री पदम प्रभु जी जन्म, तप कल्याणक
२७ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत, चातुर्मास निष्ठापन
२८ अक्टूबर २०१९	कार्तिक कृष्ण ३०	भगवान महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक
२९ अक्टूबर २०१९	कार्तिक शुक्ला २	श्री पुष्पदन्त जी ज्ञान कल्याणक
२ नवम्बर २०१९	कार्तिक शुक्ला ६	श्री नेमीनाथ जी गर्भ कल्याणक
४ नवम्बर २०१९	कार्तिक शुक्ला ८	अष्टमी व्रत अष्टान्हिका पर्व प्रा.
९ नवम्बर २०१९	कार्तिक शुक्ला १२	श्री अरहनाथ जी ज्ञान कल्याणक
११ नवम्बर २०१९	कार्तिक शुक्ला १४	चतुर्दशी व्रत
१२ नवम्बर २०१९	कार्तिक शुक्ला १५	अष्टान्हिका पर्व पूर्ण, श्री संभवनाथ जी जन्म कल्याणक

प.पू. गणाचार्य गुरुवर श्री विरागसागर जी महाराज

शंका- समाधान का अर्थ है कि- चोक नली का ऑपरेशन
शंका- समाधान का अर्थ है कि- अवरोध को दूर करना
शंका- समाधान का अर्थ है कि- बंद दरवाजों का खुलना
शंका- समाधान का अर्थ है कि- बैरियर का खुल जाना
तत्व चिंतन में आये हुए संदेह को दूर करना-शंका समाधान है।
तत्व ज्ञान में उत्पन्न हुई समस्यों का समाधान करना-शंका समाधान है।
जिज्ञासा का अर्थ है- आप ज्ञान की गहराई में उतरे हैं।
आपने ठीक तरह से सुना है।
आप अपने ज्ञान को और विकसित करना चाहते हैं।

समाचार

धर्मचर्या अनुपम उदाहरण हुआ श्रावक साधना शिविर

बेलगछिया कलकता में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ पू. आचार्यश्री सुबलसागर जी महाराज, पू. मुनिश्री सुपार्श्व सागर जी महाराज ससंघ की कुल ६१ पिच्छियों के पावन सान्निध्य में पर्युषण महापर्व पर दिनांक ३ सितम्बर से १२ सितम्बर २०१९ तक श्रावक साधना शिविर का आयोजन किया गया। वैसे तो पर्युषण पर्व पर जैन समाज में सभी स्थानों पर धर्म साधना की जाती ही है। पर इस वर्ष कलकत्ता जैन समाज के एवं बाहर से आये हुये श्रावकों को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज, पू. सुबलसागर जी महाराज एवं पू. मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्रावक साधना शिविर में धर्माचरण को अपने जीवन में आचरण में लाने एवं व्यवहार रूप से समझने का इतिहास में प्रथम बार ऐसा अवसर प्राप्त हुआ। जहाँ प्रतिदिन प्रात: ५ बजे से रात्रि ९ बजे तक व्यवस्थित रूप से कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रतिदिन प्रात: ५ बजे से ध्यान, ६.१५ बजे अभिषेक पूजन इत्यादि ८.३० बजे से प्रवचन, १०.३० बजे से भोजन, ११.३० बजे ईर्यापथ प्रतिक्रमण १२ बजे से सामायिक, १.३० बजे से रत्नकरण्ड श्रावकाचार की कक्षा २.३० बजे से तत्त्वार्थ सूत्र का पाठ एवं व्याख्या ५.३० बजे प्रतिक्रमण आचार्य वंदना आरती, शंका-समाधान, आनन्द यात्रा रात्रि ७.१५ बजे से सामायिक तथा ८.१५ बजे से शास्त्र प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पर्युषण पर्व में दिनांक ३ सितम्बर से १२ सितम्बर तक प्रतिदिन ध्यान की क्लास एक रत्नकरण्ड श्रावकाचार की क्लास आ. श्री सुबलसागर जी ने ली। प्रतिदिन प्रात: ६ बजे से श्री जी का अभिषेक के बाद शान्तिधारा एवं गणाचार्य श्री के श्री मुख से सम्पन्न एवं पूजन क्रमश: आ. चिन्तनमती माताजी, आ. विशिष्टश्री माताजी, मुनि श्री विधेयसागर जी, आ. विसंयोजनाश्री माताजी, मुनि विश्वनायक सागर जी, आ. विकुन्दनश्री माताजी, आ. वियोजनाश्री माताजी, मुनि विनिवेष सागर जी, मुनि विश्वभवसागर जी, आ. विजिज्ञासाश्री माताजी, द्वारा सम्पन्न कराई गई इस धर्मों पर प्रवचन क्रमश: पू. मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी, पू.आ. श्री सुबलसागर जी महाराज एवं प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के द्वारा अत्यन्त सरल एवं उदयग्राही अमृत वचनों में श्रवण करने को प्राप्त हुए। प्रतिदिन दोपहर की सामायिक क्रमश: आ. वियोजनाश्री माता जी, ऐलक विनियोग सागर जी, आ. विप्राश्री माताजी, आ. विजितश्री माताजी, आ.विरम्याश्री माताजी, आ. विजिज्ञासाश्री माताजी, मुनिश्री विधेयसागर जी, आ. विजेताश्री माताजी, आ. विजेनाश्री माताजी, मुनिश्री विश्वाक्षर सागर जी महाराज, द्वारा तत्वार्थसूत्र के दशों अध्यायों का पाठ क्रमश: मुनिश्री विवर्धन सागर जी, आ. चिन्तनमति माताजी, मुनिश्री विकौशल सागर जी, क्षुल्लिका विज्ञप्ति श्री माता जी, मुनि श्री विश्वलोचन सागर जी, क्षुल्लिका सुश्रेयमती माताजी, मुनिश्री अनंगसागर जी, मुनिश्री विश्वविद सागर जी, आ. विजिज्ञासाश्री माताजी, एवं आ. विसुव्रता श्री माताजी, द्वारा किया गया।

दस दिन तक तत्त्वार्थसूत्र के १-१ अध्याय की विशद व्याख्या प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा की गई। प्रतिदिन सायं ५.३० बजे से श्रावक प्रतिक्रमण क्रमश: आ.विशिष्टश्री माताजी, आ. चिन्तनमती माता जी, मुनि विनिवेष सागर जी, आ. विजिज्ञासाश्री माताजी, मुनि श्री विधेय सागर जी, आ. विशिष्टश्री माताजी, ऐलक विनियोग सागर जी, आ. विसुव्रता श्री माताजी, मुनि श्री विशौर्य सागर जी एवं आ. विश्वासश्री माताजी द्वारा कराया गया। प्रतिदिन सायं आचार्य वंदना के पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा जिज्ञासाओं का समाधान किया। तत्पश्चात् आर्यिका माताजीओं द्वारा आनन्द यात्रा एवं रात्रि ७.१५ बजे सामायिक दिनांक ३ एवं ४ सितम्बर को तथा ७-८ एवं ११-१२ सितम्बर को संघस्थ ब्रह्मचारिणी दीदीओं द्वारा एवं ५-६ तथा ९-१० सितम्बर को संघस्थ ब्रह्मचारी भैयाओं द्वारा सम्पन्न कराई गई। प्रतिदिन क्रमश: सम्यक् दर्शन एवं सम्यक्दर्शनक के आठ अंगों पर क्रमश: एक एक अंग पर ब्रह्मचारी भैया बहिनों के प्रवचन तथा तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

भाद्र शुक्ल अष्टमी दिनांक ६ सितम्बर को भगवान पुष्पदन्त जी के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर भगवान पुष्पदंत की पूजन कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

दिनांक ५ सितम्बर को मठ के पू. भट्टारक स्वस्ति श्री भानुकीर्ति जी पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारें एवं पर्युषण में पूर्ण समय श्रावक साधना शिविर में उपस्थित रहकर धर्मलाभ लिया। दिनांक ६ सितम्बर को पू. गणाचार्य श्री के प्रति अपनी विनंयाजलि अर्पित की।

दिनांक ९ सितम्बर के विख्यात जैन भजन गायक श्री रूपेश जी जैन पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने अपने भजनों के माध्यम से पू. गणाचार्य श्री के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की।

दिनांक १२ सितम्बर को प्रात: ६ बजे से शाम ४.३० बजे अनवरत पूजन आदि कार्यक्रम चलते रहे जिसमें भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी का निर्वाण महोत्सव पर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

दिनांक १३ सितम्बर को श्री दिग. जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति द्वारा शिविरार्थियों का सम्मान किया गया। पर्युषण पर्व के लगातार १० उपवास करने वाले मुनिश्री विदाम्बर सागर जी मुनिश्री विधेयसागर जी, मुनिश्री विकौशल सागर जी, आर्यिका विशिष्टश्री माताजी, आर्यिका चिन्तनमती माताजी, क्षुल्लिका विश्वनेहा श्री माताजी, का पारणा पू. गुरुदेव के साथ हुआ। पू. गणाचार्य श्री का सभी उपवास करने वाले साधु साध्वियों एवं श्रावकों को मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। सोलह के सोलह उपवास लगातार करने वालों आर्यिका विप्राश्री माताजी, आर्यिका विरक्षणाश्री माताजी, आर्यिका विजितश्री माताजी का पारणा एवं पू. गुरुदेव का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

चातुर्मास की स्थापना से लेकर पर्युषण पर्व की समाप्ति तक सम्पूर्ण संघ द्वारा ९७४ उपवास १३४ नीरस आहर की साधना की श्रावक साधना शिविर में ९०० शिविरार्थीयों ने भाग लिया जिन्होंने पूर्ण मनोयेाग के साथ अनुशासित रूप से शिविर में आज्ञानुशासन का पालन करते हुए धर्म लाभ लिया।

श्री विराग सम्यक्ज्ञान शिक्षण शिविर सम्पन्न

३१ अगस्त २०१९ बेलगछिया कलकता में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्यम में दिनांक २२ जुलाई २०१९ से श्री विराग सम्यक्ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें गोम्मटसार कर्मकाण्ड का प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा ९० शिविरार्थियों को गोम्मटसार कर्मकाण्ड की ४० गाथाओं का अन्वयार्थ भावार्थ के विस्तार सहित बहुत ही सरल और सुगम पद्धति से अध्ययन कराया गया। पू.आ.श्री सुबलसागर जी महाराज द्वारा ६५ शिविरार्थियों को तत्वार्थ सूत्र, श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी द्वारा ७० शिविरार्थियों को चौबीस ठाणा, श्रमणी आर्यिका विश्वास श्री माताजी द्वारा ५० शिविरार्थियों को **फॉर यूथ प्रोग्रेस** एवं श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माताजी, द्वारा ४५ शिविरार्थियों को **बाल विज्ञान** का अध्ययन कराया गया। प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा ४५ छात्र-छात्राओं को योग साधना का अभ्यास कराया गया। दिनांक ३० अगस्त को शिविरार्थियों की परीक्षा के साथ शिविर का समापन हुआ। शिविर में सभी शिविरार्थियों ने मनोयोग से भाग लिया। कलकता में प्रथम बार इस प्रकार के शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें शिविरार्थियों का धर्मलाभ के साथ ज्ञान पिपासा जाग्रत हुई। श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति द्वारा सभी शिविरार्थियों का समुचित व्यवस्था प्रदान की।

पू. आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का समाधि दिवस एवं पू. आ.श्री आदिसागर जी का जन्म दिवस मनाया

दिनांक १ सितम्बर २०१९ को श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन उपवन मंदिर बेलगछिया में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ पू. मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में प.पू. आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज का ५४वाँ जन्म दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती शशि गोधा, श्रीमती सुलेखा पाटनी के मंगलाचरण से हुआ। दीप प्रज्वलन एवं चित्र अनावरण श्री सन्तोष जी सेठी श्रीमती मंजू जी सेठी द्वारा किया गया। वाहर से आये अतिथियों ने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री दि. जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति ने सभी सम्मान किया। पू.मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महराज, पू. आचार्य श्री सबुलसागर जी महाराज द्वारा दोनों आचार्यों के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की गई। प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा आ. शान्तिसागर जी महाराज एवं पू. आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज के जीवन अनेक प्रसंगों का व्याख्यान करते हुए अपनी विनयांजलि अर्पित की तथा उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

प.पू. निमित्त ज्ञानी आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज की १०४वीं जन्म जयन्ति मनाई

२२ सितम्बर २०१९ को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन उपवन मंदिर बेलगछिया कलकता में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महराज ससंघ के पावन

सान्निध्य में प.पू. निमित्त ज्ञानी वात्सल्य दिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की १०४वाँ जन्म जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ भक्ति नृत्य के साथ मंगलाचरण की महिला मण्डल की प्रस्तुति के साथ हुआ। चित्र अनावरण व दीप प्रज्वलन श्री पवनजी से श्रीमती पाणादेवी सेठ, श्री सुमेरमल जी चूडीवाला द्वारा किया। प.पू. वात्सल्य दिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की अष्टद्रव्य से पूजन सम्पन्न की गई। जिसके मंत्रों का उच्चारण प.पू. गणाचार्य श्री के श्री मुख से किया। इस अवसर चातुर्मास में मुनि संघ की चिकित्सा वैय्यावृत्ति के समर्पित चिकित्सक आयुर्वेदाचार्य श्री राधेश्याम जी वैद्य जी का श्री दिग. जैन मुनिसंघ व्यवस्था समिति द्वारा सम्मान किया गया। प.पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के अमृतमयी प्रवचनों पर आधारित **सिद्धो का खजाना, क्यों इतना अभिमान, मोक्ष की राह**, की पुस्तकों के गुजराती अनुवाद का विमोचन किया गया। श्रमणी आर्यिका विदुषी श्री माताजी ससंघ की प्रेरणा से प.पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ आये श्रावकों ने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज, पू. श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज के यहाँ से आये दीक्षार्थी भैया बहिनों ने पू. गणाचार्य का पाद प्रक्षालन किया एवं भक्ति पूर्वक अर्ध समर्पित किया। पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज द्वारा भेजी गयी नवीन पिच्छी दीक्षार्थी भैया बहिनों ने पू. गणाचार्य श्री को भेंट की। तत्पश्चात् प. वात्सल्य दिवाकर निमित्त ज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के जीवन के आधार लघु नाटिका का मंचन आचार्यश्री शान्ति सागर जी महाराज फाउन्डेशन एवं श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति द्वारा किया गया। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने अपने दीक्षा गुरु पू. आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के जीवन के अनेक प्रंसगों काव्याख्याण करते अनेक स्मृतियों के साथ अपनी विनयांजलि अर्पित की।

दीक्षार्थियों की गोद भराई

कार्यक्रम के समापन में पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के यहाँ से आये दीक्षार्थी बा.ब्र. देवास भैया, बा.ब्र. सार्थक भैया बा.ब्र. अंकित भैया, बा.ब्र. मणिकान्त भैया तथा पू. श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज के यहाँ से आये दीक्षार्थी ब्र. दीपक भैया, ब्र. सरोज दीदी की गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी दीक्षार्थियों ने प.पू. गणाचार्यश्री के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए अपने संयमी जीवन के उत्तरोत्तर वृद्धि का आशीर्वाद मांगा।

प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा दीक्षार्थी भैया बहिनों सभी उपस्थित सभी जग समूह को अपना मंगल आशीष दिया।

श्रद्धाञ्जलि- श्री दिगम्बरत्व के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज की सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

श्री भक्तामर विधान सम्पन्न

३१ अगस्त २०१९ को श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन उपवन मंदिर बेलगछिया कलकता में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ पू मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ ६१ पिच्छी के पावन सान्निध्य में श्री दीपशिखा महिला मण्डल बड़ा बाजार कोलकता द्वारा श्री विराग सम्यक् ज्ञान शिक्षण शिविर के समापन के उपलक्ष्य में श्री भक्तामर विधान का आयोजन किया गया जिसे पं. आनन्द जी शास्त्री द्वारा विधि पूर्वक सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने अपनी अमृतमयी देशना में धर्मोपदेश देते हुए कहा कि समयसार की गाथा १९९ में आ. कुन्दकुन्द दे ने कहा है कि ज्ञान का सार व्रत धारण करना है। शास्त्र के माध्यम से हम समझ लेते है कि पाप कर्म से दु:ख प्राप्त होता है। गुरुओं से हमे सत्य की जानकारी मिल जाती है। इसलिए हमे पाप का त्याग करने की प्रेरणा के साथ-संकल्पी हिंसा नहीं करायेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, किसी की खोई हुए, रखी हुई भूली वस्तु को ग्रहण नहीं करेंगे। अपनी पत्नी/पति के अलावा अन्य किसी स्त्री/पुरुष का त्याग करते पैसे का उपयोग धर्मकार्यों में करने, दीन दुखी गरीब लोग का हित करने एवं मनुष्यों/ प्राणियों की रक्षा करने की प्रेरणा दी। पू. गणाचार्य श्री ने सभी को पूरे समाज को श्री दीपशिखा महिला मण्डल को अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव के रयणसार ग्रन्थ पर १३०० पृष्ठीय संस्कृत टीका दो भागों में १८ अधिकारों में १७२ गाथा का सरल सुबोध्य संस्कृत भाषा में ८३ संस्कृत व ३४

प्राकृत ग्रन्थों कुल ११७ ग्रन्थों के उद्धरण के साथ रत्नत्रय वर्द्धिनी का प्रणयन किया गया है। युग प्रतिक्रमण यति सम्मेलन करगुवां जी झांसी में २१ मई से २३ मई २०१७ तक आयोजित राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी डॉ श्रेयांस कुमार जी बडौत के संयोजकत्व में लगभग १५० विद्वानों की उपस्थिति में **रत्नवर्द्धिनी टीका** का अनुष्ठान पूर्वक विमोचन किया गया था तथा विद्वानों द्वारा रत्नत्रय वर्द्धिनी टीका पर अपने आलेख वाचन किये गये थे। प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों के प्रमाण स्वरूप अनेक गाथाओं श्लोकों आदि के उदघृत संदर्भों से यह ग्रन्थ वैशिष्टता पूर्ण कृति है।

श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन उपवन मंदिर बेलगछिया में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ, पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में दिनांक २४ सितम्बर से २७ सितम्बर २०१९ तक डॉ श्री श्रेयांस कुमार जी बडौत के संयोजकत्व में तथा प्रति. आनन्द शास्त्री कोलकता के सह संयोजकत्व में रत्नत्रय वर्द्धिनी एवं पू. आचार्य भगवन्त श्री कुन्दकुन्द देव के लिगपाहुड पर भी प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा लिखित संस्कृत टीका **श्रमण प्रबोधनी** पर २४ राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्धन्य विद्वानों की त्रिदिवसीय विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

विद्वत संगोष्ठी का शुभारंभ श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माताजी एवं श्रमणी आर्यिका विश्वास श्री माताजी के मंगलाचरण से हुआ। पू.आ. श्री विमलसागर जी महाराज एवं पू.आ. श्री सन्मतिसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण श्री विनोद ढोल्या, चक्रेशजी, मनीष जी गंगवाल, श्री सम्पत जी छावड़ा, प्रेमजी, सन्तोष जी सेठी द्वारा एवं दीपप्रज्वलन डॉ कमलेश जी, डॉ. मुकेश जी, पं. सुरेश जी मामोरा आदि विद्वानों द्वारा किया गया। मंगल कलश की स्थापना श्रीमती कुसुम छावड़ा, श्रीमती अनीता गंगवाल श्रीमती किरण गंगवाल द्वारा की गई। श्री मनीष जी गंगवाल श्री विनोद जी ठोल्या, श्री सन्तोष जी सेठी, डॉ. श्री श्रेयांस जी बड़ौत, प्रो.डॉ. कमलेश जी बाणारसी सहित विद्वत वर्ग ने प.पू. गणाचार्य श्री को श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. श्री श्रेयांस जी बडौत द्वारा पूर्व भूमिका के साथ सभी विद्वान यशस्वी परिचय कराया एवं आयोजन समिति श्री दिग. जैन मुनिसंघ व्यवस्था समिति द्वारा टोपी तिलक लगाकर एवं किट भेंट कर सम्मान किया गया।

संगोष्ठी के प्रथम/ उदघाटनसत्र की अध्यक्षता डॉ. श्रीकमलेश जी वाणारसी एवं संचालन डॉ. श्रेयांस जी बडौत द्वारा किया गया। आलेख वाचन पं.श्री सुरेश जी मामौरा द्वारा सम्यक्त्व का स्वरूप रत्नत्रय वर्द्धिनी टीका के परिपेक्ष्य में एवं डॉ. श्रेयांस जी बडौत द्वारा श्रमण प्रबोधनी टीका पर किया गया- डॉ. श्री कमलेश जी वाणारसी के अध्यक्षीय उदबोधन के पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा समीक्षात्मक उद्बोधन दिया गया। एवं आलेख वाचन में आई शंकाओं जिज्ञासाओं का समाधान दिया। श्रमण प्रबोधनी टीका के डॉ. श्रेयांस जी बडौत के आलेख वाचन जिसमें मुनियों के सम्बन्ध में मुनियों के समक्ष बडी कुशलता के साथ विषय का प्रतिपादन किया। वर्तमान में साधुओं को अपनी निर्दोष आगमानुसार चर्या पालन करना बहुत आवश्यक है।

अन्त में पू. गणाचार्य श्री ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद दिया। दोपहर २ बजे से विद्वत संगोष्ठी का द्वितीय सत्र का शुभारंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता प्रो. श्री नरेन्द्र प्रकाश जी गाजियाबाद ने की। सारस्वत अतिथि पं. श्री महेन्द्र कुमार जी पूर्व प्राचार्य मुरैना एवं संचालन प्रति श्री आनन्द प्रकाश जी कोलकता ने किया। मंगलाचरण में प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा शास्त्रसार समुच्चय पर रचित चूर्णीसूत्रों का वाचन प्रो. कमलो जी वाणारसी द्वारा किया गया। आलेख वाचन पं. आशीष शास्त्री दमोह द्वारा साधु का योग्य अयोग्य आहार रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में, प्रतिष्ठाचार्य पं. पवन कुमार जी दीवान मुरैना द्वारा ममता और दुर्ध्यान के दुष्परिणाम रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में। इंजी. पं. दिनेश जी भिलाई द्वारा सम्यक्दर्शन के सुपरिणाम रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में, प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री विनोद कुमार जी, रजवांस द्वारा श्रमण प्रबोधनी में श्रमण चर्या प्रो. नरेन्द्र प्रकाश जी गाजियाबाद द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा समीक्षात्मक उद्बोधन के साथ पात्र भक्ति एवं आर्यिका चर्या आदि पर विशेष व्याख्यान किया।

अन्त में सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। दिनांक २५ सितम्बर को प्रात: काल की बेला में विद्वत संगोष्ठी का तृतीय सत्र का शुभारंभ श्री सन्तोष जी सेठी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। पं. श्री महेन्द्र कुमार जी शास्त्री मुरैना द्वारा शास्त्रसार समुच्चय पर पू. गणाचार्य श्री द्वारा रचित चूर्णीसूत्रों का वाचन किया गया। मंगलाचरण श्रीमती नीतूजी जैन द्वारा किया गया।

विद्वत संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. श्रेयांस कुमार जी जैन बडौत सारस्वत अतिथि पं. श्री विनोद कुमार जी रजवांस आलेख वाचन पं. मुकेश जैन विमल दिल्ली द्वारा रयणसार की रत्नत्रय वर्द्धिनी टीका में मोक्ष मार्ग रत सम्यक् दृष्टि, प्रो. नरेन्द्र जी गाजियाबाद द्वारा रयणसार की रत्नत्रय वर्द्धिनी टीका में मोक्षमार्ग में श्रावक धर्म-गाथा १ से १३ तक प्रो. कमलेश कुमार जी जैन वाणारसी द्वारा अध्ययन किया। **अज्झयणं झाणं** श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माताजी द्वारा रत्नत्रय वर्द्धिनी टीका के परिप्रेक्ष्य में गुरु का महत्व पर आलेख वाचन किया गया। डॉ. श्रेयांस कुमार जी बडौत द्वारा अध्यक्षी उद्बोधन एवं पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज द्वारा समीक्षात्मक उद्बोधन दिया गया।

राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र दोपहर दो बजे से प्रारंभ हुआ। संचालन प्रतिष्ठाचार्य कमल कुमार जी शास्त्री कोलकता द्वारा अध्यक्षता पं. श्री विमलकुमार जी जयपुर एवं सारस्वति अतिथि प्रो. अशोक कुमार जी जैन वाणारसी रहे। आलेख वाचन पं. श्री महेन्द्र कुमार जी शास्त्री पूर्व प्राचार्य मुरैना द्वारा दान पूजा आहार दान का महत्व और फल, डॉ. श्री सनतकुमार जी जयपुर द्वारा पूजा दानादि के हरण का कुफल, डॉ. श्री कमलेश कुमार जी वाणारसी द्वारा नत्नत्रय वर्द्धिनी टीका के परिप्रेक्ष्य में स्वाध्याय जिनागम का फल, श्रमणी आर्यिका चिन्तनमती माताजी द्वारा साधकों का तप आराधना रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में पं. आशीष जी शास्त्री, राष्ट्रीय पुरुस्कार हेतु चयनित शाहगढ़ द्वारा आहार चर्या के गुण दोष रत्नत्रय वर्द्धिनी टीका के प्ररिप्रेक्ष्य में अध्यक्षी उद्बोधन पं. श्री विमलकुमार जी जयपुर द्वारा एवं प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महामुनिराज का समीक्षात्मक उद्बोधन एवं सभी को मंगल आशीर्वाद।

राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी का पंचम सत्र २६ सितम्बर को प्रात: ८ बजे से प्रारंभ हुआ जिसका मंगलाचरण श्रमणी आर्यिका विश्वास श्री माताजी एवं श्रमणी आर्यिका विकुन्दन श्री माताजी द्वारा किया गया। दीपप्रज्वलन प्रो. श्री फूलचन्द जी प्रेमी, ब्र. विनोद भैया, पं. श्री राजेन्द्र महावीर सनावद प्राचार्य श्री अनिल जी शास्त्री, पं. अशोक कुमार जी द्वारा किया गया। अध्यक्षता डॉ. फूलचन्द जी प्रेमी एवं सारस्वत अतिथि डॉ. वृषभी प्रसाद जी वाणारसी रहे। आलेख वाचन पं. श्री विमलकुमार जी जयपुर द्वारा सम्यक् दृष्टि और मिथ्यादृष्टि में अन्तर रत्नत्रय वर्द्धिनी के प्ररिपेक्ष्य में प्रो. अशोककुमार जी जैन वनारस द्वारा सम्यक् दृष्टि की क्रियायों का वैशिष्ट रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में ब्र. श्रीमती सन्तोष जी कोलकता संघस्थ आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी द्वारा आर्यिकाओं की नवधा भक्ति व आर्यिका चर्या। बा.ब्र. विनोद भैया जी छत्तरपुर द्वारा लिग पाहुड की श्रमण प्रबोधनी टीका में अब्रह्म सेवन के दुष्परिणाम, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी द्वारा शुद्ध सम्यक्त्वी जीव की विशेषताएँ। अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो.श्री फूलचन्द्र जी प्रेमी, प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा समीक्षात्मक उद्बोधन एवं सभी को मंगलआशीष।

विद्वत संगोष्ठी के छटवें सत्र का शुभारंभ २६ सितम्बर दोपहर २ बजे से स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मी सेन जी स्वामी मेल चित्तामूर मठ के द्वारा दीप प्रज्वलन एवं तमिल भाषा में दक्षिण भारत से आयी महिला द्वारा किये गये। मंगलाचरण से हुआ सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक कुमार जी वनारस ने की संचालन इन्जी. पं. दिनेश जी भिलाई ने किया। भट्टारक स्वस्ति श्री लक्ष्मी सेन जी स्वामी द्वारा प.पू. गणाचार्य श्री के प्रति विनयांजलि अर्पित की गई। प्रतिष्ठाचार्य श्री भाग चन्द जी धरियाबाद, पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन समिति द्वारा पं. भागचन्द जी का सम्मान किया गया। आलेख वाचन श्री राजेन्द्र महावीर सनावद द्वारा वहिरात्मा का चिन्तन रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में। प्रो. फूलचन्द जी प्रेमी द्वारा श्रमण प्रवोधनी में स्त्री सहचर सम्बन्धी दोष पर डॉ. अनिल जी सागानेर द्वारा रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में दान के फल पर प्रतिष्ठाचार्य श्री कमल कुमार जी कोलकता द्वारा रत्नत्रय वर्द्धिनी के परिप्रेक्ष्य में अब सर्पिणी काल का प्रभाव। डॉ. वृषभ प्रसाद जी वनारस द्वारा श्रमण प्रबोधनी और साधु पर पू. मुनिश्री विवर्धन सागर जी द्वारा रत्नत्रय वर्द्धिनी के प्ररिप्रेक्ष्य में आत्म स्वभाव की प्राप्ति पर आलेख वाचन किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन डॉ. अशोक कुमार जी वनारस द्वारा श्री चिंरजी लाल बगड़ा एवं श्री आनन्दी लाल जी, प.पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे उन्होंने श्री फल भेंट कर पू. गणाचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया।

राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी में भाग लेने आये विद्वानगण-

(१) प्रो. श्री कमलेश कुमार जी वनारस
(२) पं. श्री सुरेश जी मामोरा, इन्दौर
(३) डॉ. सनत कुमार जी जयपुर
(४) डॉ. विमल कुमार जी जयपुर

(५) इन्जी. पं. दिनेश जी भिलाई
(६) पं. आशीष जी शास्त्री दमोह
(७) डॉ. आशीष जी शास्त्री शाहगढ़
(८) प्रतिष्ठाचार्य विनोद कुमार जी रजवांस
(९) प्रतिष्ठाचार्य श्री पवन कुमार जी दीवान
(१०) पं. श्री महेन्द्र कुमार जी शास्त्री मुरैना
(११) प्रो. नरेन्द्र प्रकाश जी गाजियाबाद
(१२) प्रो. श्रीफूलचन्द्र जी प्रेमी
(१३) प्रो. श्री वृषभ प्रसाद जी
(१४) प्रो. श्री अशोक कुमार जी
(१५) बा.ब्र. श्री विनोद कुमार जी छतरपुर
(१६) श्री राजेन्द्र जी महावीर सनावद
(१७) पं. श्री मनीष जी वनारस
(१८) पं. श्री अनिल जी सागानेर जयपुर
(१९) डॉ. श्री कमलेश जी वनारस
(२०) प्रति. श्री कमलकुमार जी कोलकाता
(२१) पं. श्री आनन्द प्रकाश जी
(२२) डॉ. श्री श्रेयांस कुमार जी बडौत
(२३) डॉ. श्री राकेश जी श्रीमाल कोलकता
(२४) ब्र. सन्तोष दीदी कोलकता

श्री दिग. जैन मुनिसंघ व्यवस्था समिति द्वारा समीक्षात्मक विद्वानों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा सभी क्षात्मक उद्‌बोधन तथा जटिल गूढ विषयों का विश्लेषण जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए सभी को अपना मंगल आशीष प्रदान किया।

२७ सितम्बर को राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी के सप्तम एवं समापन सत्र में मंगलाचरण आ. विशिष्टश्री माताजी एवं विश्वास श्री माताजी द्वारा दीप प्रज्वलन संगोष्ठी का विद्वानों द्वारा किया गया।

संगोष्ठी के इस सत्र में पू. आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष पर पू. आचार्य शान्ति सागर जी महाराज के कृतत्व एवं व्यक्तत्व पर पं. श्री सुरेश जी मामोरा, प्रो. श्री कमलेश कुमार जी वनारस प्रतिष्ठाचार्य श्री कमल कुमार जी कोलकता ने व्याख्यात दिया।

प.पू आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के रजत समाधि वर्ष पर उनके जीवन पर प्रतिष्ठाचार्य श्री पवन कुमार जी मुरैना, प्रो. श्री फूलचन्द जी प्रेमी एवं डॉ. श्री श्रेयांस कुमार जी बडौत द्वारा पू. आ. श्री विमलसागर जी के अनेक प्रसंग एवं उनके लोकोपकारी कार्यों का व्याख्यान किया श्री सन्तोष जी ललिता जी सेठी कोलकाता द्वारा सभी विद्वानों का सम्मान किया गया।

पू.आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के १०४वें जन्म दिवस पर २२ सितम्बर को श्री शान्तिसागर जी फाउन्डेशन एवं श्री दिग. जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति द्वारा निमित्तज्ञानी प.पू. आ. विमलसागर जी के जीवन पर आधारित लघुनाटक का मंचन किया गया। नाटक के सभी पात्रों का सम्मान किया गया। नाटक की पटकथा का लेखन श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी को प्रेरणा से श्रमणी आर्यिका विकुन्दन श्री माता जी द्वारा किया गया।

प.पू. आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के मुनिदीक्षा के शताब्दी वर्ष पर श्री शान्तिसागर जी फाउन्डेशन द्वारा ५० ग्रन्थों का प्रकाशन कराया गया। उन ग्रन्थों के पुण्यार्जकों द्वारा ग्रन्थों का विमोचन किया गया तथा ग्रन्थ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज एवं मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज को भेंट किये गये।

आ.श्री शान्तिसागर फाउन्डेशन कोलकता द्वारा आ. श्री शान्तिसागर पुरुस्कार के लिये विद्वता के क्षेत्र उत्कृष्ट कार्यों के लिये विश्व विख्यात, मूर्धन्य, विद्वान अ.भा. शास्त्री परिषद के यशस्वी अध्यक्ष श्री डॉ. श्रेयांस कुमार जी बडौत को वर्ष २०१९ के पुरुस्कार के लिये अभिनन्दन पत्र के साथ १ लाख की राशि भेंट कर सम्मानिता किया गया। यह सम्मान आ. श्री शान्तिसागर जी फाउन्डेशन की ओर से श्री मनीष जी गंगवाल श्री महावीर गंगवाल श्री आनन्द जी शास्त्री द्वारा किया गया। श्री दिग. जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति द्वारा भी डॉ. श्री श्रेयांस कुमार जी का सम्मान किया गया।

डॉ. श्रेयांस कुमार जी जैन द्वारा सम्मान का आभार मानते हुए प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की।

राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी के समापन पर विद्वानों द्वारा रत्नत्रय वर्द्धिनी एंव श्रमण प्रबोधनी पर प्रस्तुत आलेखों समीक्षा करते हुए सभी को अपना मंगल आशीर्वाद देते हुए। प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने अमृतमयी उद्‌बोधन में कहा कि पू. आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज की मुनिदीक्षा शताब्दी वर्ष एवं प.पू. आचार्य श्री विमलसागर जी की रजत समाधि वर्ष के अवसर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न पर विद्वानों ने दोनों महान आचार्यों के जीवन पर अपने व्याख्यान दिये। आ.

शान्तिसागर जी को समझने के लिये उनके समाधि के समय की घटनाओं को समझें। आचार्य आदिसागर जी की जब समाधि चल रही थी उसमें आ. शान्तिसागर जी अनेक साधुओं के साथ उपस्थित हुए थे। उनकी समाधि देखकर उनके अन्दर समाधि का वीजारोपण हुआ और उन्होंने कुन्थलगिरि में अपनी समाधि का स्थान चयन किया। उनकी समाधि का देखने हजारों की भीड़ उपस्थित हुई। सल्लेखना में २२वें दिन उनका प्रवचन हुआ तो वह आंख बंद किये प्रवचन में बीच-बीच में ऊँ नम: सिद्धेभ्य: बोलते रहे अपने प्रवचन में उन्होंने साधुओं व समाज को अनेक संकेत दिये। जो लोग यह मान लेते हैं कि आ. शान्तिसागर जी ने लुप्त हुई मुनि परंपरा को प्रारंभ क्रियाए कहने से अनेक समस्या आयेंगी। हाँ यह था कि उत्तर में यह परम्परा करीब करीब लुप्त हुई थी पर दक्षिण में तो थी, उन्होंने उत्तर में इस परम्परा को जगाया। आज सबसे ज्यादा साधु उत्तर के ही हैं। हम पू.आ. विमलसागर जी के ऋणी है उन्होंने चाहे उत्तर हो या दक्षिण सारे देश में ३ बार भ्रमण कर उन्होंने जो उपकार किया है उसे भुलाया नहीं जा सकता। वह जो भी करते थे उससे कभी-कभी लोग कहते थे, मैने भी एक वार कहा कि आप जो कुछ करते हैं तो उन्होंने कहा कि ऐसा करने से लोग मिथ्यात्व के मार्ग से बचेगें मैं तो उन्हें धर्म में ही लगाता हूँ। कलकत्ता समाज ने ग्रन्थ प्रकाश करके बहुत बड़ा कार्य किया। इससे देश विदेश में ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। युवा विद्वानों को आगे आना चाहिये। कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के अन्य विद्वानों के सम्पर्क में रहते नवीन ग्रन्थों के शोधन कार्य में आगे आयें तो बहुत अच्छा होगा।

पं. श्रेयांस कुमार जैन बडौत बहुत अच्छे विद्वान हैं किसी भी परिस्थिति में उन्होंने घुटने नहीं टेके। श्रवण बेलगोला में उन्हें चांदी के रथ में बिठाकर वहाँ के भट्टारक जी ने जो सम्मान किया वह प्रसंसनीय है आ. शांन्तिसागर फाउण्डेशन के सभी लोगों को बहुत-बहुत आशीर्वाद जो उन्होंने इस प्रकार से साहित्य का प्रकाशन करने का कार्य किया।

बेलगछिया में हुआ- सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर का परिणाम घोषित

२९ सितम्बर २०१९ बेलगछिया उपवन में विराजमान परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा- संसार में सब कुछ सुलभ है। हर वस्तु धन से मिल सकती है लेकिन यदि कुछ दुर्लभ है तो वह है '**सम्यग्दर्शन**'।

सम्यग्दर्शन एक ऐसी शक्ति है जिसके प्राप्त होते ही व्यक्ति की बिगड़ी दशा सुधर जाती है। जीवन का विसंगतियाँ दूर हो जाती हैं और जीवन सदाचार से भर जाता हैं। सम्यग्दर्शन व्यक्ति को उन्नति की ओर अग्रसर करता है। परमार्थभूत सच्चे देव शास्त्र, गुरु पर सच्ची श्रद्धा रखने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है अत: हम उस सम्यग्दर्शन की सदैव आराधना करें।

इसी अवसर पर परम पूज्य श्रमणाचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज तथा श्रमण मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज, श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माता जी ने भी जन मानस को सुविचार से लाभान्वित किया।

विशेष आकर्षक बना चातुर्मास में लगाया गया सम्यग्दर्शन प्रशिक्षण शिविर का परीक्षा परिणाम। बेलगछिया में बड़े जोर शोर से प्रशिक्षण शिविर चला जिसमें परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज द्वारा कर्म सिद्धान्त का रहस्योदघाटित करने वाले गोम्मट कर्मकाण्ड मंच को शिक्षा प्रदान की जिसमें लगभग ९० महिला पुरुषों ने बड़े मनोयोग से अध्ययन किया एवं परीक्षा दी उसमें से प्रथम स्थान ५० में से ४९.५ अंक प्राप्त करने वाली श्रीमती अनीता दगड़ा श्रीमान राकेश दगड़ा रही तथा द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले तीन परीक्षार्थी रहे। १. श्रीमती प्रीति पाटनी, श्रीमान मनीष कुमार पाटनी, २. श्रीमती संतोषकाला श्री अशोक काला, ३. श्रीमती बबीता पाण्डया श्री वीरेन्द्र कुमार पाण्डया एवं तृतीय स्थान पर १. श्रीमती सरिता कासलीवाल श्री तेजराज कासलीवाल, २. श्रीमती किरण गंगवाल श्री कमल कुमार गंगवाल, ३. श्रीमती मंजू सेठी श्री संतोष सेठी जी ने प्राप्त किया। द्वितीय तत्वार्थसूत्र की क्लास प.पू. श्रमणाचार्य सुबल सागर जी महाराज द्वारा पढ़ाई गई जिसमें श्रीमती प्रियंका जैन, श्रीमती शशि गोधा ने १०० में १०० अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्रीमती शालू जैन, श्रीमती नीरू जैन ने द्वितीय स्थान एवं श्रीमती संगीता जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चौबीस ठाणा की क्लास श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी ने ली जिसमें श्रीमती सुनयना जैन पत्नि श्री सरोज कुमार जैन, श्रीमती नेहा जैन पत्नि श्री राजेश जैन ने प्रथम स्थान एवं श्रीमती पिंकी पहाडिया पत्नी संजीव पहाड़िया, श्रीमती अम्बिका ठोल्या पत्नी पदम ठोल्या ने द्वितीय एवं श्रीमती सुलेखा जैन पत्नि दीपक जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी को विशेष एवं अन्य सभी परीक्षार्थियों को भी प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित किया।

दीक्षार्थी भैया की गोद भराई सम्मान- पू. श्रमणाचार्य श्री विभव सागर जी महाराज जो निवाई, राजस्थान में चातुर्मास साधनारत है उनके यहाँ के दीक्षार्थी भैया बा.ब्र. श्री वीरु भैया की गोद भराई की गई। बा.ब्र.वीरु भैया जी ने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर अपनी विनयांजलि अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

मखाना खाने के अनेक फायदे

आप मखाने के चार दानों का सेवन करके शुगर से हमेशा के लिए निजात पा सकते हैं। इसके सेवन से शरीर में इंसुलिन बनने लगता है और शुगर की मात्रा कम हो जाती है फिर धीरे-धीरे शुगर रोग भी खत्म हो जाता है।

सेवन की विधि- अगर आप जल्द से जल्द मधुमेह को खत्म करना चाहते हैं तो सुबह खाली पेट चार दाने मखाने (हल्का भूनकर) खाएं। इनका सेवन कुछ दिनों तक लगातार करें। इससे मधुमेह का रोग तेजी से खत्म होगा।

दिल के लिए फायदेमंद- मखाना केवल शुगर के मरीज के लिए ही नहीं बल्कि हार्ट अटैक जैसी गंभीर बीमारियों में भी फायदेमंद है। इनके सेवन से दिल स्वस्थ रहता है और पाचन क्रिया भी दुरुस्त रहती है।

तनाव कम- मखाने के सेवन से तनाव दूर होता है और अनिद्रा की समस्या भी दूर रहती है। रात को सोने से पहले दूध के साथ मखानों का सेवन करें।

जोड़ों का दर्द दूर- मखाने में कैल्शियम भरपूर मात्रा में होता है। इनका सेवन जोड़ों के दर्द, गठिया जैसे मरीजों के लिए काफी फायदेमंद साबित होता है।

पाचन में सुधार- मखाना एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होता है जो सभी आयु वर्ग के लोगों को आसानी से पच जाता है। इसके अलावा फूल मखाने में एस्ट्रीजन गुण भी होते हैं जिससे यह दस्त से राहत देता है और भूख में सुधार करने के लिए मददगार है।

किडनी को मजबूत- फूल मखाने में मीठा बहुत कम होने के कारण यह स्प्लीन को डिटॉक्सीफाइ करता है किडनी को मजबूत बनाने और ब्लड को बेहतर रखने के लिए मखानों का नियमित सेवन करें।

राजाबाबू गोधा, जैन गजट संवाददाता, फागी

चीनी : एक मीठा जहर

चीनी बनाने की सबसे पहली मिल अंग्रेजों ने १८६८ में लगाई थी। उसके पहले भारतवासी शुद्ध देशी गुड़ खाते थे और बीमार नहीं पड़ते थे चीनी एक जहर है जो अनेक रोगों का कारण है, जानिये कैसे-

१. चीनी बनाने की प्रक्रिया में गंधक का सबसे अधिक प्रयोग होता है। गंधक माने पटाखों का मसाला।
२. गंधक अत्यंत कठोर धातु है जो शरीर में चला तो जाता है परंतु बाहर नहीं निकलता।
३. चीनी कॉलेस्ट्रॉल बढ़ाती है जिसके कारण हृदयघात या हार्ट अटैक आता है।
४. चीनी शरीर के वजन को अनियन्त्रित कर देती है जिसके कारण मोटापा होता है।
५. चीनी रक्तचाप या ब्लड प्रैशर को बढ़ाती है।
६. चीनी ब्रैन अटैक का एक प्रमुख कारण है।
७. चीनी की मिठास को आधुनिक चिकित्सा में सूक्रोज कहते हैं जो इंसान और जानवर दोनों पचा नहीं पाते।
८. चीनी बनाने की प्रक्रिया में तेइस हानिकारक रसायन का प्रयोग किया जाता है।
९. चीनी डाइबिटिज का एक प्रमुख कारण है।
१०. चीनी पेट की जलन का एक प्रमुख है।
११. चीनी शरीर में ट्राइ ग्लिसराइड को बढ़ाती है।
१२. चीनी पेरेलिसिस अटैक या लकवा होने का एक प्रमुख कारण है।
१३. कृपया जितना हो सके, चीनी से गुड़ पे आएँ।

यह अच्छी बात, लोगों अपने मित्र, रिश्तेदार और ग्रुप में अवश्य शेयर करें।

बढ़ेगी बच्चों में स्मरण शक्ति, दूर होगी नकारात्मकता

गर्मियों की छुट्टियाँ बीच चुकी हैं और बच्चे एक बार फिर से पढ़ाई में जुटने वाले हैं। अगर बच्चा सीखने की प्रवृत्ति से दूर भागता है तो घर में मौजूद वास्तु दोष इसका कारण हो सकता है। आसपास मौजूदक नकारात्मक ऊर्जा भी बच्चों को

एकाग्रता से दूर ले जा सकती है। वास्तु में कुछ आसान से उपाय बताए गए हैं, जिनसे स्मरण शक्ति और एकाग्रता बढ़ाने में मदद मिल सकती है। आइए जानते हैं इनके बारे में। जो विद्यार्थी ठीक से याद नहीं कर पाते हों उन्हें अपने पास कपूर और फिटकरी रखनी चाहिए। यह नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर देते हैं। चंदन का तिलक लगाने से त्वचा शुद्ध रहती है साथ ही स्मरण शक्ति भी बढ़ती है। बच्चों को तुलसी के ११ पत्तों का रस मिश्री के सथ नियमित रूप से दें। छात्रों को अध्ययन करते समय जूते मोज़े नहीं पहनना चाहिए। विद्यार्थियों को बुधवार के दिन भगवान श्रीगणेश को प्रसन्न करने के लिए बेसन के लड्डू का प्रसाद अर्पित करना चाहिए। बच्चों के कमरे में नींम की एक डाली लगा दें। ऐसा करने से कमरे का वातावरण शुद्ध होता है और एकाग्रता में वृद्धि होती है। बच्चों के अध्ययन कक्ष में माँ सरस्वती का चित्र लगाएँ और माँ के समक्ष कपूर का दीपक जलाएँ। अध्ययन कक्ष में हरे रंग के परदे लगाने चाहिए। पढ़ते समय विद्यार्थी अपना मुख पूर्व या उत्तर दिशा में रखें। गायत्री मंत्र का जाप करने से भी मन शांत होता है और एकाग्रता बढ़ती है। बच्चे जहाँ भी पढ़ाई करें वहाँ प्राकृतिक रोशनी हो। पाठ्य पुस्तकों में गुरुवार के दिन मोरपंख रखें। बच्चों के कमरे में दौड़ते हुए घोड़े या उगते हुए सूरज की तस्वीर लगाएँ। पढ़ाई की मेज पर खाद्य सामग्री न रखें।

दैनिक विश्वमित्र से सभार, कोलकाता

खाने का कोई धर्म नहीं, खाना खुद एक धर्म

नयी दिल्ली, भोजन आपूर्ति करने वाली कंपनी जोमेटो में अपने नेटवर्क पर भोजन पैकेट पहुँचाने वाले एक लड़के के धर्म को लेकर ग्राहक की शिकायत को सुनने से मंगलवार को इंकार कर दिया, साथ ही कहा कि खाने का कोई धर्म नहीं होता है, मामला म.प्र. के जबलपुर का है, यहाँ के रहने वाले अमित शुक्ला ने जोमेटो से खाना मंगाया, जब शुक्ला ने देखा कि खाना पहुंचाने आया मुस्लिम है, तो उसने जोमैटो से अलग डिलिवरी वॉय भेजने को कहा, शुक्ला ने मंगलवार की रात ट्वीट किया कि अभी-अभी मैंने जोमैटो से एक ऑर्डर रद्द किया, उन्होंने मेरा खाना गैर-हिंदू व्यक्ति के साथ भेजा और कहा कि वे इसे न तो बदल सकते हैं और न ही ऑडर रद्द करने पर पैसा बापस कर सकते हैं, मैंने कहा कि आप मुझे खाना लेने के लिए बाध्य नहीं कर सकते हैं, मुझे पैसा वापस नहीं चाहिए, बस ऑर्डर कैंसिल करो, इसके जवाब में जौमैटो ने लिखा कि खाने का कोई धर्म नहीं होता है, खाना खुद ही एक धर्म है, इस बीच, शुक्ला की पत्नी सिमरन ने कहा कि इस मुद्दे को बेवजह तूल दिया जा रहा है। कोई व्यक्ति अपने धर्म और रीति-रिवाज को लेकर बात कर रहा है, तो क्या गलत कर रहा है, मेरे पति ने कुछ गलत नहीं किया है।

प्रभात खबर से साभार, कोलकाता

लोकसभा में मिच्छामि दुक्कडं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने १३ फरवरी को १६वीं लोकसभा के आखिरी भाषण में सदन के नेता रूप में सदन के सभी सदस्यों की ओर से किसी भी प्रकार की गलती के लिए मिच्छामि दुक्कडं शब्दों का प्रयोग करके माफी मांगी। प्राकृत भाषा के जैन आगम ग्रन्थ आवश्यक सूत्र में इस वाक्य का बारम्बार प्रयोग हुआ हैं। जैन धर्मावलम्बी प्रतिक्रमण की साधना के बार-बार इस वाक्य का उच्चारण करके अपने ज्ञात-अज्ञात दोषों का निवारण करते हैं, पापों का प्रायश्चित करते हैं।

लोकसभा में जब अनेक सदस्य इस वाक्य का अर्थ नहीं समझ पाए तो मोदी ने कहा कि क्षमा प्रार्थना के लिए जैन धर्म के पर्यूषण पर्व में मिच्छामि दुक्कडं एक बहुत बड़ा सन्देश देने वाला शब्द हैं। उस भावना को मैं प्रकट करता हूँ। हालांकि मोदी अपने कथन में पर्युषण शब्द की बजाय पर्यावरण शब्द बोल गये, लेकिन इससे भाव में कोई विशेष अन्तर नहीं हुआ। वस्तुत: पर्युषण पर्व पर्यावरण रक्षा का सन्देश देने वाला महान पर्व हैं। पर्युषण पर्व के दिनों में व्रतनिष्ठ जैनी हरी वनस्पति का उपयोग नहीं करते हैं, संयमित जीवन जीते हैं और उपवास रखते हैं। पर्युषण के समापन पर सभी मिच्छामी दुक्कडं बोलकर क्षमा का आदान-प्रदान करते हैं।

प्राकृत भाषा का छोटा सा वाक्य मिच्छामि दुक्कडं बहुत व्यापक अर्थ रखता हैं। इसका अर्थ होता हैं-मेरा दुष्कृत्य पाप मिथ्या हो, निष्फल हो। मुझसे हुई भूलों व गलतियों के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। आत्मशुद्धि के अलावा सच्चे मन से बोले गये इस वाक्य से अनेक टूट हुए सम्बन्ध जुड़ सकते है और जुड़े हुए सम्बन्ध सुदृढ़ हो सकते हैं। अपने गहरे अर्थों में यह वाक्य लोक, लोकतंत्र और समाज को नवशक्ति देता है।

प्रधानमंत्री द्वारा लोकसभा में मिच्छामि दुक्कडं बोलना प्राकृत जैसी प्राचीन शास्त्रीय और भारतीय भाषाओं का सम्मान हैं।

भारतीय भाषाओं का सम्मान इसलिए कहा कि हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के उद्भव और विकास में प्राकृत का उसी प्रकार बुनियादी योगदान हैं, जिस प्रकार संस्कृत के प्रति अनुराग दर्शाया हैं। इससे यह प्रेरणा मिलती है कि हमें हमारे वचन व्यावहार, सत्कार, खेद-ज्ञापन, अभिवादन आदि में हिन्दी और भारतीय भाषा के प्रयोग को वरीयता देनी चाहिए।

उल्लेखनीय हैं कि २०१४ में गुजरात विधानसभा से विदाई के वक्त भी मोदी ने मिच्छामि दुक्कडं बोलकर क्षमायाचना की थी। अब हमें भी सारी और एक्सक्यूज मी की बजाय अधिक अर्थपूर्ण वाक्य मिच्छामि दुक्कडं का उपयोग करना चाहिए। अभिवादन, अगवानी, विदाई आदि में भी हाय, हैलो, गुड मोर्निंग, इवनिंग, बॉय जैसे शब्दों की बजाय जय जिनेन्द्र, नमस्कार, पधारों जैसे भारतीय शब्दों के प्रयोग को प्राथमिकता देना अच्छा हैं। छोटे-छोटे शब्द प्रयोग एवं छोटी-छोटी बातों में मनुष्य का विवेक बड़ा प्रभाव छोड़ सकता है।

जैनमित्र साप्ताहिक से साभार

लकड़ी से नहीं बनता है कागज

कलकत्ता पेपर ट्रेडर्स एसोसियेशन (सीपीटीए) ने यह दावा किया कि कागज लकड़ी से नहीं बनते हैं। उनका कहना है कि केवल १५ प्रतिशत पेपर लकड़ी से बनते हैं। बाकी पुराने कागज की रिसाइक्लिंगकर बनाया जाता है। यहाँ एक संवाददाता सम्मेलन में भाग लेने हुये संगठन के अध्यक्ष गोपाल साहा का कहना है कि पेपर लकड़ी से बनते हैं और इससे पर्यावरण को खतरा है। यह सभी एक प्रकार को झूठी बात है। इससे लोगों को गुमराह किया जा रहा है। उनका कहना है कि एगरो आधार वाले सामानों से आज कागज बनाये जा रहे हैं। पुराने कागज विदेशों से भी प्राप्त किये जाते हैं। उनका कहना है कि पेपर से पर्यावरण को कोई खतरा नहीं है। आज भी अधिकतर कार्य पेपर में ही होते हैं। इस अवसर पर मौजूद सजल गोयनका ने कहा कि एक अगस्त को पेपर डे मनाया जायेगा। इस अवसर पर उन लोगों के संगठनों की ओर से दिल्ली में एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया है जिसमें देश के सभी पेपर संगठन भाग ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि एक अगस्त को इसलिए पेपर डे मनाने का फैसला किया गया है क्योंकि पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पुणे ने पेपर प्लांट का इस्तेमाल किया गया। उन लोगों ने यह मांग की कि उस दिन को अंतराष्ट्रीय पेपर डे घोषणा किया जायेगा।

दैनिक विश्वमित्र से साभार कोलकाता

अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों को स्कालरशिप

मेरिट कम मीन्स स्कॉलरशिप फॉर माइनॉरिटीज २०१७ केंद्र सरकार की एक महत्वकांक्षी छात्रवृत्ति योजना है। इसके तहत अल्पसंख्यक समुदायों (सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि) के पेशेवर व तकनीक संबंधी विषयों से जुड़े छात्रों से आवेदन मांगे जाते हैं।

इस छात्रवृत्ति का मुख्य उद्देश्य अल्पसंख्यक समुदाय में गरीब, पिछड़े व प्रतिभावान विद्यार्थियों की आर्थिक मदद करना है। चयनित छात्रों को शैक्षणिक शुल्क व रहन-सहन भत्ता दिया जाएगा।

योग्यता- तकनीकी या पेशेवर पाठ्यक्रमों में दाखिला पाने वाले अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र आवेदन कर सकते हैं।

आवेदक बारहवी या स्नातक में न्यूनतम ५० प्रतिशत अंक लाया हो।

आवेदक के परिवार की आमदनी ढाई लाख रूपये सलाना से कम हो।

आवेदक अल्पसंख्यक समुदाय से हो।

आवेदन प्रक्रिया- www.scholarships.gov.in पर जाएं और वहाँ दिए गए तमाम दिशा-निर्देशों को पढ़ें। लॉग-इन पर क्लिक करें और खुद को नए वेब पेज पर रजिस्टर करें।

आपके मोबाइल फोन पर ओटीपी आएगा, जिसे वेबपेज पर डालने के बाद आवेदन पत्र स्क्रीन पर आएगा। आवेदन पत्र सही-सही भरें। सभी जरूरी प्रमाण पत्रों की सत्यापित फोटोकॉपी अपलोड करें। इसके बाद सबमिट पर क्लिक करें।

जरूरी दस्तावेज - आवेदक की फोटो, वेरिफिकेशन फॉर्म, आय प्रमाण पत्र, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, अकादमिक मार्कशीट, शैक्षणिक शुक्ल रसीद, बैक खाता संख्या, आधार कार्ड, आवास प्रमाण पत्र।

गौरतलब है कि ३० प्रतिशत छात्रवृत्ति अल्पसंख्यक समुदाय की छात्राओं के लिए आरक्षित है।

छात्रवृत्ति के संबंध में विशेष जानकारी के लिए helpdesk@nsp.gov.in पर इमेल करें।

जैन गजट से साभार

विराग वर्ग पहेली 46

उदाहरण - र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे-विराग

र	त्न	क	र	ण्ड	श्रा	व	क	चा	र
चा	झि	मू	सा	ल	मि	ल	ता	य	चा
का	रि	रे	ला	ग	च	म	ण	के	का
व	स	त्र	आ	चा	र	सा	र	ब	व
श्रा	से	त्या	सा	रा	र	ध	प्र	भु	श्रा
न्दि	द्वा	रा	से	र	ज्या	दा	मी	गु	ति
न	रू	का	द्वा	र	ह	मा	रा	मृ	ग
सु	सा	व	य	ध	र्म	दो	हा	की	त
व	है	दि	है	पि	च्छी	नि	शा	नी	मि
पू	रू	षा	र्थ	सि	द्धि	उ	पा	य	अ

विराग वर्ग पहेली 45 के उत्तर

(1) पूष्य
(2) रोहिणी
(3) भरणी
(4) स्वाती
(5) चित्रा
(6) रेवती
(7) अश्वनी
(8) कृतिका
(9) श्रवण
(10) उत्तराफाल्गुन

नोट- (1) आपको इसमें चरणानुयोग के शास्त्रों के नाम खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ [ ] डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....